

7-7 Scanned

श्रीः

रावणकृतम्-

उड्डीश तन्त्रम्

पं० रामेश्वर दत्त कृतं,

भाषा टीका सहितम्।

* फर्म *

बाबू बैजनाथ प्रसाद महोदयेन

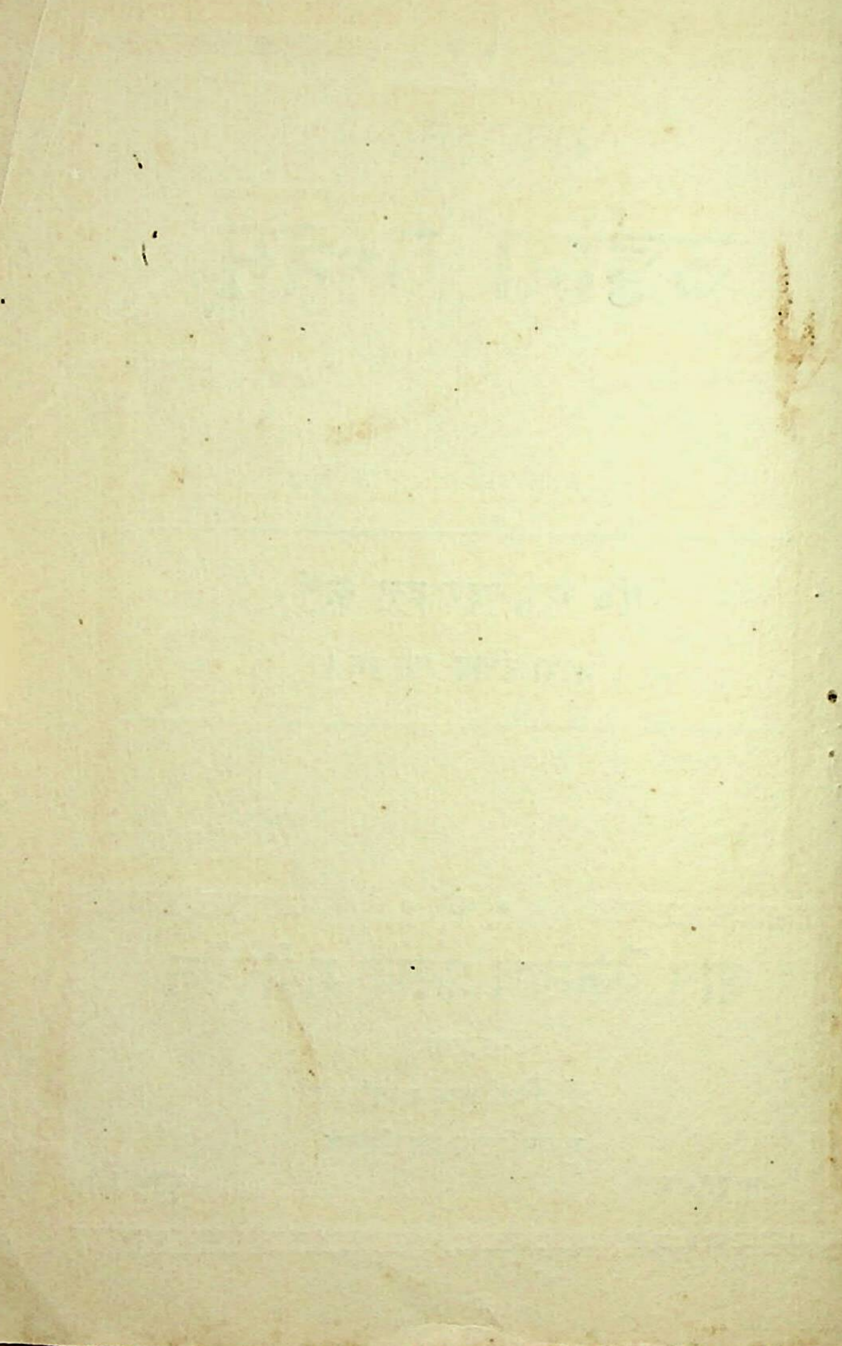
काश्यां

श्री विश्वेश्वर यन्त्रालये

मुद्रापयित्वा प्रकाशितम्

सन् १९८५

मूल्य ६)



॥ श्रीः ॥

रावणकृतम् उड्डीशतन्त्रम्

भाषाटीकासहितम्

प्रथमः पटलः

ग्रन्थावतरणिका

कैलाशशिखरे रम्ये नानारत्नोपशोभिते ।
नानाद्रुमलताकीर्णे नानापक्षिरवैर्युते ॥ १ ॥

किसी काल में कैलाश पर्वत के शिखर पर जो सदा अनेक रत्नों से भूषित है, जिस पर अनेक प्रकार के वृक्ष और लताओं का मनोहर विस्तार है जहाँ अनेक प्रकार के पशु पक्षि विहार और कल्लोल करते हैं ॥ १ ॥

सर्वर्तुकुसुमामोदमोदिते सुमनोहरे ।
शैत्यसौगन्ध्यमान्द्याढ्यैर्मरुद्भिरुपवीजिते ॥ २ ॥

और जहाँ सब ऋतुओं में अनेक प्रकार के पुष्प और फल लगे रहते हैं पुष्पों के स्पर्श तथा फलों के भार से शीतल मन्द और सुगन्ध की वायु बहती रहती है ॥ २ ॥

अप्सरागणसङ्गीतकलध्वनिनिनादिते ।
स्थिरच्छायाद्रुमच्छायाच्छादिते स्निग्धमंजुले ॥ ३ ॥

जिन वृक्षों की मनोहर और सघन तथा शीतल छाया घनी सदा बनी रहती है जिस स्थान पर अप्सराओं के मधुर गान के स्वर सुनाई पड़ते हैं ॥ ३ ॥

मत्तकोकिलसन्दोहसङ्घुष्टविपिनान्तरे ।
सर्वदा स्वगणैः सा ऋतुराजनिषेविते ॥ ४ ॥

जहाँ तहाँ वगीचों में मद से मतवाली कोकिलायें झुण्ड की झुण्ड बोलती हैं, और अपने सेवकों के सहित ऋतुराज बसन्त हर समय जिस पर्वत की सेवा किया करता है ॥ ४ ॥

सिद्ध-चारण-गन्धर्व-गाणपत्य-गणैर्वृते ।
तत्र मौनधरं देवं चराचरजगद्गुरुम् ॥ ५ ॥

जिस स्थान पर सिद्ध चारण गन्धर्व सेना सहित गणेश स्वामिकार्तिक आदि सदा निवास करते हैं उसी सुखमय पर्वत पर संसार के चराचर प्राणियों के गुरु श्रीशिवजी मौन धारण किये निवास करते हैं ॥ ५ ॥

सदाशिवं सदानन्दं करुणाऽमृतसागरम् ।
कर्पूरकुन्दधवलं शुद्धसत्वमयं विभुम् ॥ ६ ॥

जो कल्याण करने वाले सदा आनन्दमय करुणारूपी अमृत के सागर पवित्र और शुद्ध स्वरूप हैं जो कपूर और कुन्द पुष्प के समान उज्ज्वल (सफेद) वर्ण वाले हैं ॥ ६ ॥

दिगम्बरं दीनानाथं योगीन्द्रं योगिवल्लभम् ।
गंगाशीकरसंसिक्तं जटामण्डलमण्डितम् ॥ ७ ॥

दिशायें जिनका वस्त्र हैं दीन दुखियों के जो स्वामी हैं और योगियों में श्रेष्ठ तथा योगियों को जो प्रिय हैं, गंगाजी की निकलती हुई धारा से जिनकी जटाजूट सदा भींगी रहती है अर्थात् जिनकी जटामण्डल में गंगाजी सदा विहार करती हैं ॥ ७ ॥

विभूतिभूषितं शान्तं व्यालमालं कपालिनम् ।
त्रिलोचनं त्रिलोकेशं त्रिशूलवरधारिणम् ॥ ८ ॥

विभूति लगाये शान्त स्वभाव कण्ठ में सर्पों का हार पहिने और मुण्डों की माला धारण किये तीन नेत्र वाले त्रिशूल को हाथ में लिये तीनों लोक के प्रभु हैं ॥ ८ ॥

आशुतोषं ज्ञानमयं कैवल्यफलदायकम् ।
अनाद्यन्तं निर्विकल्पं निर्विशेषं निरंजनम् ॥ ६ ॥

विना विचारे ही वरदान देकर भक्तों के मनोरथ को पूर्ण करने वाले ज्ञान स्वरूप, निर्वाणपद को देनेवाले आदि अन्त से रहित और तीनों अर्थात् दैहिक, दैविक, भौतिक, तापों से रहित निरंजन हैं ॥ ९ ॥

सर्वेषां हितकर्तारं देवदेवं निरामयम् ।
अर्द्धचन्द्रोज्ज्वलद्भालं पञ्चवक्त्रं सुभूषितम् ॥१०॥

जो सबको कल्याण देनेवाले देवताओं के भी देव तथा सब प्रकार से अनामय अर्थात् जरा मरण से रहित ललाट में अर्धचन्द्र को धारण करने वाले तथा पाँच मुख वाले हैं ॥ १० ॥

प्रसन्नवदनं वीक्ष्य लोकानां हितकाम्यया ।
विनयेन समायुक्तो रावणः शिवमब्रवीत् ॥११॥

ऐसे शिवजी को प्रसन्न देखकर संसार के हित की कामना से नियम पूर्वक प्रार्थना करके राक्षसों के राजा रावण ने उनसे इस प्रकार पूछा ॥ ११ ॥

रावण उवाच

नमस्ते देव देवेश सदाशिव जगद्गुरो ।
तन्त्रविद्यां क्षणं सिद्धिः कथयस्व मम प्रभो ॥१२॥

हे संसार के स्वामी ! हे इन्द्रादि देवताओं के ईश ! सदा कल्याण को देनेवाले मैं आपको प्रणाम करता हूँ । हे प्रभो ! क्षणमात्र में सिद्धि देनेवाली तन्त्र विद्या को आपसे सुनना चाहता हूँ कृपा करके आप मुझसे वर्णन कीजिये ॥ १२ ॥

शिव उवाच

साधु पृष्टं त्वया वत्स लोकानां हितकाम्यया ।
उड्डीशाख्यमिदं तन्त्रं कथयामि तवाग्रतः ॥१३॥

शिवजी ने कहा कि हे पुत्र ! संसार के हित की कामना से बहुत अच्छी बात तुमने पूछी है, तुमको सन्तोष देनेवाला सब तन्त्रों का सार शीघ्र सिद्धि देनेवाला उड्डीश नाम का तन्त्र तुमसे कहता हूँ सावधान होकर सुनो ॥ १३ ॥

पुस्तके लिखिता विद्या नैव सिद्धिप्रदा नृणाम् ।
गुरुं विनापि शास्त्रेऽस्मिन्न नाधिकारः कथञ्चन ॥१४॥

परन्तु पुस्तक में लिखी तन्त्र विद्या सिद्धि को देने वाली नहीं होती इन क्रियाओं को बिना गुरु के अपने स्वयं कदापि न करे अपने करने में साधक को सिद्धि नहीं मिल सकती ॥ १४ ॥

अथाभिधास्यशास्त्रेऽस्मिन्सम्यक्षट्कर्मलक्षणम् ।
तन्त्रमन्त्रानुसारेण प्रयोगफलसिद्धिदम् ॥ १५ ॥

पहिले इस शास्त्र में मारण, मोहन, उच्चाटन, विद्वेषण, आकर्षण, आदि इन छः कर्मों का लक्षण वर्णन करता हूँ नाम मात्र जिनका प्रयोग करने से सिद्ध होता है ॥ १५ ॥

षट्कर्माणि

शान्तिवश्यस्तम्भनानि विद्वेषोच्चाटनं तथा ।
मारणं तानि शंसंति षट्कर्माणि मनोषिणः ॥१६॥

शान्ति, कर्म, वशीकरण, स्तंभन, विद्वेषण, उच्चाटन और मारण इन छः प्रकार की क्रियाओं को पण्डितजन षट्कर्म कहते हैं यह कहे हुए प्रयोग बिना प्रयास के सिद्धि देनेवाले हैं ॥ १६ ॥

षट्कर्म लक्षणम्

रोगकृत्या गृहादीनां निराशः शान्तिरीरिता ।
वश्यं जनानां सर्वेषां विधेयत्वमुदीरितम् ॥१७॥
प्रवृत्तिरोधः सर्वेषां स्तंभनं समुदाहृतम् ।
स्निग्धानां द्वेषजननं मिथो विद्वेषणं मतम् ॥१८॥
उच्चाटनं स्वदेशादेर्भ्रंशनं परिकीर्तितम् ।
प्राणिनां प्राणहरणं मारणं समुदाहृतम् ॥१९॥

उन छः कर्मों के लक्षण कहते हैं जिस प्रयोग से रोग और गृह के दुष्कर्म की शान्ति होती है उसको शान्ति कर्म कहते हैं, जिस प्रयोग से राजा, शत्रु, अथवा अलभ्य स्त्रियाँ वश में हो जाती हैं उसको वशीकरण कहते हैं, जिस प्रयोग से जल अग्नि, शत्रु की सेना का रुकावट हो जावे उसको स्तम्भन कहते हैं, जिस प्रयोग के करने से एक से दूसरे का प्रेम छूट जावे उसको विद्वेषण कहते हैं। जिस प्रयोग के द्वारा मनुष्य अपने पूर्व स्थान को छोड़कर भाग जाता है उसको उच्चाटन कहते हैं। जिस प्रयोगसे मनुष्य की मृत्यु होती है उसको मारण कहते है ॥१७।१८।१९

ग्रन्थविषयकथनम्

ग्रन्थेऽस्मिन् कर्षणं चादौ द्वितीयोन्मादनं तथा ।
विद्वेषणं तृतीये च चतुर्थोच्चाटनं तथा ॥२०॥
ग्रामस्योच्चाटनं पंच जलस्तम्भश्च षष्ठकम् ।
स्तम्भनं सप्तकं चैव वाजीकरणमष्टमम् ॥२१॥
अन्यानपि प्रयोगांश्च बहून् शृणवसुराधिप ।
अन्धीभावो मूकभावो गात्रसङ्कोचनं तथा ॥२२॥

हे राक्षसों के राजा रावण ! इस ग्रन्थ के प्रथम प्रकरण में आकर्षण, दूसरे में उन्मादन, तीसरे में विद्वेषण, चौथे में उच्चाटन, पाँचवें में ग्राम उच्चाटन, छठे में जल स्तम्भन, सातवें में स्तंभन, आठवें में वशीकरण, इसके सिवाय और भी अन्धा, बहिरा आदि बनाने का प्रयोग नवें दशवें में वर्णित है ।। २० ।। २१ ।। २२ ।।

बधिरोलूककरणे भूतज्वरकरं तथा ।
मेघानां स्तम्भनं चैव दध्यादिकविनाशनम् ।।२३।।
मत्तोन्मत्तकरं चैव गजवाजि प्रकोपनम् ।
आकर्षणं भुजंगानां मानवानां तथैव च ।।२४।।
सस्यादिनाशनं चैव परग्रामप्रवेशनम् ।
वेतालादिकसिद्धिश्च पादुकाञ्जनसिद्धयः ।।२५।।

बहिरा बना देना, उल्लू बना देना, भूत लगाना, ज्वर चढ़ाना, मेघ का स्तभन, दही आदि को नष्ट करना, पागल बना देना, हाथी घोड़ा आदि को पागल बनाना, सर्प तथा मनुष्य को आकर्षण करना, अन्न आदि को नाश करना, दूसरे के नगर में हठात् प्रवेश करना, इसके सिवाय भूत प्रेत और पादुका सिद्धि तथा नेत्र को अञ्जन आदि की सिद्धि विधिपूर्वक वर्णन किया है ।। २३-२५ ।।

कौतुकं चेन्द्रजालं च यक्षिणीमन्त्रसाधनम् ।
गुटिका खेचरत्वं च मृतसंजीवनादिकम् ।।२६।।
अन्यान् बहूँस्तथा रौद्रान् विद्यामन्त्रास्तथा परम् ।
औषधं च तथा गुप्तं कार्यं वक्ष्यामि यत्नतः ।।२७।।
उड्डीशं यो न जानाति स रुष्टः किं करिष्यति ।

मेरुं चालयते स्थानात् सागरं प्लावयेन्महीम् ॥२८॥

इन्द्रजाल की क्रीड़ा विधि, यक्षिणी का साधन मन्त्र, गुटिका बनाने की विधि, आकाश गमन करने की विधि, मृतक को जीवित करने की विधि, इसके सिवाय और भी भयानक विद्याओं की विधि उत्तम मन्त्र, उत्तम औषधी, आदि गुप्त कार्यों का विधिवत् वर्णन करूँगा। जो मनुष्य शिवजी के कहे उड्डीश तन्त्र को नहीं जानता वह क्रोधित होकर क्या कर सकता है। उड्डीश तन्त्र सुमेरु को हटाने वाला और पृथ्वी को डुबा देने वाला है ॥ २८ ॥

अकुलीनोऽधर्मोऽबुद्धिर्भक्तिहीनः क्षुधान्वितः।
मोहितः शङ्कितश्चापि निन्दकश्च विशेषतः ॥२९॥
अभक्ताय न दातव्यं तन्त्रशास्त्रमनुत्तमम्।
तथैतैः सह संयोगे कार्यं नोड्डीशको ध्रुवम् ॥३०॥

यह तन्त्र विद्या वर्णशंकर को, नास्तिक को, भक्ति से हीन को, भूखे को, मोह में फँसे को, भय से पीड़ित को, निन्दा करने वाले को नहीं बताना चाहिये क्योंकि उनसे यह उड्डीश तन्त्र का प्रयोग कभी भी नहीं सिद्धि होने वाला है ॥ २९ ॥ ३० ॥

यदि रक्षेत् सिद्धिमेतामात्मानं तु तथैव च।
देवतागुरुभक्ताय दातव्यं सज्जनाय च ॥३१॥
तपस्विबालवृद्धानां तथा चैवोपकारिणाम्।
निश्चितं सुमति प्राप्य यथोक्तं भाषितानि च ॥३२॥

इसलिये यदि तन्त्र विद्या की सिद्धि और अपने आत्मा की रक्षा चाहे तो देवता, गुरु, भक्त, सज्जन, बालक, तपस्वी, वृद्ध, सत्यवादी और परोपकारियों के लिये इस विद्या को देवे। ऐसा करने से आत्मा की रक्षा और तन्त्र की सिद्धि होती है ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

न तिथिर्न च नक्षत्रं नियमो नास्ति वासरः ।
न व्रतं नियमो होमः कालवेला विवर्जितम् ॥३३॥
केवलं तन्त्रमात्रेण ह्यौषधी सिद्धिरूपिणी ।
यस्य साधन मात्रेण क्षणात् सिद्धिश्च जायते ॥३४॥

इस प्रयोग में तिथि, वार, नक्षत्र, व्रत होम, और समय का विचार न करे केवल तन्त्र से औषधियाँ सिद्धि देने वाली होती हैं, जिसका साधन करने से क्षण भर में कठिन प्रयोग भी सिद्धि हो जाती है ३३-३४

शशिहीना यथा रात्री रविहीनं यथा दिनम् ।
नृपहीनं यथा राज्यं गुरुहीनं च मन्त्रकम् ॥३५॥

जैसे चन्द्रमा बिना रात्रि, सूर्य के बिना दिन, राजा के बिना राज्य सुख देने वाला नहीं होता है वैसेही गुरुके बिना मन्त्र भी फल को देने वाला नहीं हो सकता ॥ ३५ ॥

इन्द्रस्य च यथा वज्रं पाशश्च वरुणस्य च ।
यमस्य च यथा दण्डो वह्नेशशक्तिर्यथा दहेत् ॥३६॥

जैसे इन्द्रका वज्र कठिन से कठिन वस्तुओं को चूर्ण कर देता है, वरुण का पास महावलवान् को बाँध सकता है। जैसे यम का दण्ड सबको दण्ड दे सकता है और अग्नि सबको भस्म कर सकती है ॥ ३६ ॥

तथैवैते महायोगाः प्रयोज्याः क्षेमकर्मणि ।
सूर्यं प्रपातयेद् भूमौ नेदं मिथ्या भविष्यति ॥३७॥

उसी प्रकार बड़े से बड़े कार्य इन मन्त्रों के द्वारा शीघ्र ही सिद्ध हो जाते हैं। यह असत्य नहीं है इन मन्त्रों की शक्ति सूर्य को भी पृथिवी पर गिरा सकती है ॥ ३७ ॥

अपकारिषु दुष्टेषु पापिष्ठेषु जनेषु च ।
प्रयोगैर्हन्यमानेषु दोषो नैव प्रजायते ॥३८॥
योजयेदनिमित्तं यो आत्मघाती न संशयः ।
असन्तुष्टः प्रयोगे यः शास्त्रमेतन्न सिद्धिदम् ॥३९॥

दुष्ट, दुराचारी, दुराग्रही, नास्तिक, पापी, ऐसे पीड़ा देने वाले मनुष्यों पर मारण प्रयोग करना चाहिये, यदि बिना प्रयोजन किसी पर मारण करे तो अपना ही नाश हो जाता है और जिसको इन क्रियाओं में विश्वास नहीं उनको इन प्रयोगों से सिद्धि नहीं मिलती ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

मारणप्रयोगः

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि प्रयोगं मारणाभिधम् ।
सद्यः सिद्धिकरं नृणां शृणु रावण यत्नतः ॥४०॥

हे लंकापति ! अब मैं तुम्हारे हित के लिये मारण का प्रयोग कहता हूँ सावधान होकर सुनो, जो मनुष्यों को शीघ्र सिद्धि देनेवाला है ॥४०॥

मारणं न वृथा कार्यं यस्य कस्य कदाचन ।
प्राणान्तसंकटे जाते कर्त्तव्यं भूतिमिच्छता ॥४१॥

मारण प्रयोग किसी पर व्यर्थ नहीं करना चाहिये इसका प्रयोग अपनी रक्षा के निमित्त उस समय में करना उचित है जब कि अपने प्राणों पर संकट पड़ा हो ॥ ४१ ॥

मूर्खेण तु कृते तन्त्रे स्वस्मिन्नेव समापयेत् ।
तस्माद्रक्ष्यं सदात्मानं मारणं न क्वचिच्चरेत् ॥४२॥

मूर्ख का किया हुआ प्रयोग उसी को नाश कर देता है इसलिये जो सदा अपने आत्मा की रक्षा करना चाहे उसको मारण की क्रिया नहीं करनी चाहिये ॥ ४२ ॥

ब्रह्मात्मानं तु विततं दृष्ट्वा विज्ञानचक्षुषा ।
सर्वत्र मारणं कार्यमन्यथा दोषभाग्भवेत् ।
कर्त्तव्यं मारणं चेत्स्यात्तदा कृत्यं समाचरेत् ॥४३॥

जो सम्पूर्ण जगत को ब्रह्मस्वरूप जानता है और ज्ञान रूपी चक्षु से सबको ब्रह्म समान देखता है वह यदि संकट पड़ने पर मारण प्रयोगकरे तो ठीक है । इसके अतिरिक्त जो कोई मारण प्रयोग करता है वह उस पाप का भागी होता है यदि कार्यवश मारण प्रयोग करना ही पड़े तो नीचे लिखे अनुसार मारण का प्रयोग करना चाहिये ॥ ४३ ॥

रिपुपादतलात्पांसु गृहीत्वा पुत्तलीं कुरु ।
चिताभस्मसमायुक्तंमध्यमारुधिरान्वितम् ॥४४॥

शत्रु के पैर के नीचे की मिट्टी में चिता की भस्म और मध्यमा अंगुली का रक्त मिलाकर उसकी पुतली (मूर्ति) बनावे ॥ ४४ ॥

कृष्णवस्त्रेण संवेष्ट्य कृष्णसूत्रेण बन्धयेत् ।
कुशासने सुप्तमूर्तिर्दीपं प्रज्ज्वालयेत्ततः ॥४५॥

फिर उस पुतली को काले रंग के कपड़े में लपेट कर ऊपर से काला डोरा बाँधे पीछे उस मूर्ति को कुशा के आसन पर शयन कराके उस पर दीपक जलावे ॥ ४५ ॥

अयुतं प्रजपेन्मन्त्रं पश्चादष्टोत्तरं शतम् ।
मन्त्रराजप्रभावेण माषांश्चाष्टोत्तरं शतम् ॥४६॥

और मारण मन्त्र का दश हजार जप करे बाद एक सौ आठ उर्दी लेकर एक सौ आठ बार फिर मन्त्र को जपै ॥ ४६ ॥

पुत्तलीमुखमध्ये तु निक्षिपेत् सर्वमाषकान् ।
अर्धरात्रिकृते योगे शक्रतुल्योऽपि मारयेत् ॥४७॥

फिर उस अभिमन्त्रित उर्दी को उस मूर्ति के मुख में डाल देवे। मध्यरात्रि के समय इस प्रयोग को करने से इन्द्र के बराबर भी शत्रु का नाश हो जाता है ॥ ४७ ॥

प्रातः काले पुत्तलिकां श्मशाने च निनिक्षिपेत् ।
मासात्मकप्रयोगेण रिपोर्मृत्युर्भविष्यति ॥४८॥

रात्रि में इस मारण प्रयोग को करके प्रातःकाल उस पुतली को स्मशान में गाड़ देवे, इस तरह एक महीना तक मारण प्रयोग करने से अवश्य शत्रु की मृत्यु हो जाती है ॥ ४८ ॥

मारणमन्त्रः—ॐ नमः कालसंहाराय अमुकं हन हन क्रीं हुँ फट् भस्मीकुरु कुरु स्वाहा ।

निम्बकाष्ठं समादाय चतुरंगुलमानतः ।
शत्रुकेशान् समालिप्य ततो नाम समालिखेत् ॥४९॥
चितांगारे च तन्नाम्ना धूपं दद्यात् समाहितः ।
त्रिरात्रं सप्तरात्रं वा यस्य नाम उदाहृतम् ॥५०॥
कृष्णाष्टम्यां चतुर्दश्यां चाष्टोत्तरशतं जपेत् ।
प्रेतो गृह्णाति तच्छीघ्रं मन्त्रेणानेन मन्त्रवित् ॥५१॥

इस मन्त्र का प्रयोग करते समय इसमें जहाँ अमुक शब्द हैं वहाँ शत्रु का नाम लेना चाहिये। चार अंगुल की नीम की लकड़ी लेकर उसमें शत्रुके शिरका बाल लपेटे और उसीसे शत्रु का नाम लिखे फिर उस नाम को सावधानी से चिता की आग से उस लकड़ी को धूप देवे। इस प्रकार सात रात्रि तक जिसके नाम पर करे इस मन्त्र के प्रभाव से उसको प्रेत पकड़ लेता है। प्रयोग करने वाला कृष्णपक्ष की अष्टमी से प्रारम्भ कर चतुर्दशी तक समाप्त करे और प्रतिदिन इसे निम्नलिखित मन्त्रका एकसौ आठ बार जप करे।

मन्त्रः--ॐ नमो भगवते भूताधिपतये विरूपाक्षाय घोरदंष्ट्रिणे विकरालिने ग्रहयक्षभूतेनानेन शंकर अमुकं हन हन दह दह पच पच गृह्ण गृह्ण हुँ फट् ठः ठः ।

इस मन्त्र के प्रयोग में इसी मन्त्र का एक सौ आठ बार जप करना चाहिये । प्रयोग करते समय उसमें जहाँ 'अमुक' शब्द है वहाँ जिसके ऊपर प्रयोग करना हो उसका नाम लेना चाहिये ॥

नरास्थिकीलकं पुष्ये गृह्णीयाच्चतुरंगुलम् ।
निखनेत्तु गृहे यावत्तावत्तस्य कुलक्षयः ॥५२॥

मनुष्य की हड्डी चार अंगुल की लेकर पुष्य नक्षत्र में जिसके गृह में गाड़ देवे तो परिवार सहित उसका नाश हो जावे इसमें संशय नहीं यह योग विना मन्त्र के सिद्ध है ।

सर्पास्थ्यंगुलमात्रं चाश्लेषायां च रिपोर्गृहे ॥
निखयेच्छतधा जप्तं मारयेत् रिपुसन्ततिम् ॥५३॥

इसी प्रकार अश्लेषा नक्षत्र में एक अंगुल की सर्पकी हड्डी लेकर शत्रु के गृह में खोदकर गाड़ देवे और इस निम्नलिखित मन्त्र को दश हजार जप करे तो शत्रु की सम्पत्ति नाश हो जाती है ।

ॐ सुरेश्वराय स्वाहा ।

इस मन्त्र से प्रयोग करने में सिद्धि होती है विना मन्त्र को सिद्ध किये प्रयोग करना नहीं चाहिये ।

अश्वास्थिकीलमश्विन्यां निखनेच्चतुरंगुलम् ।
शत्रोर्गृहे निहन्त्याशु कुटुम्बं वैरिणां कुलम् ॥५४॥

अश्विनी नक्षत्र में घोड़े की हड्डी की चार अंगुल की कील नीचे

लिखे मन्त्र से अभिमन्त्रित करके शत्रु के गृह में गाड़ देवे तो शत्रु के परिवार का नाश हो जाता है ॥ ५४ ॥

मन्त्रः---हुं हुं फट् स्वाहा ।

सप्त दशाभिमन्त्रितं कृत्वा निखनेत् ।

इस मन्त्र को सात बार अभिमन्त्रित कर शत्रु के गृह में गाड़ देना चाहिये।

आर्द्रायां निम्बवन्दाकं शत्रोः शयनमन्दिरे ।
निखनेन्मृतवच्छत्रुरुद्धृते च पुनः सुखी ॥५५॥

जिस घर में शत्रु शयन करता हो उस घर में आर्द्रा नक्षत्र में निम्ब की कील खोदकर गाड़ देने से शत्रु का मारण हो जाता है जब उस कील को निकाल लेवे तो फिर पहिले के समान सुखी हो जाता है ॥ ५५ ॥

तथा शिरीषवन्दाकं पूर्वोक्तेनोडुना हरेत् ।
शत्रोर्गेहे स्थापयित्वा रिपोर्नाशो भविष्यति ॥५६॥

इस विधि के अनुसार सिरीष का कील लेकर शत्रु के घर में गाड़ देवे तो उसका नाश हो जाता है ॥ ५६ ॥

मन्त्रः---हुं हुं फट् स्वाहा ।

एकविंशति वारमभिमन्त्रितं कृत्वा निखनेत् ।

इन दोनों प्रयोगों में कील को इस मन्त्र से इक्कीस बार अभिमन्त्रित करके शत्रुके घर में गाड़ देवे तो परिवार सहित शत्रु का नाश हो जाता है इसमें संशय नहीं करना चाहिये ।

मन्त्रः--ॐ डं डां डिं डीं डुं डूं डें डैं डों डौं डं डः अमुकं गृह्ण गृह्ण हुं हुं ठः ठः ।
रिपुविष्ठां वृश्चिकं च खानित्वा तु विनिःक्षिपेत् ।

आच्छाद्यावरणेनाथ तत् पृष्ठे मृत्तिकां क्षिपेत् ।
म्रियते मलरोधेन उद्धृते च पुनः सुखी ॥५७॥

इस मंत्र से मनुष्य की हड्डी का कील बनाकर हजार बार अभिमंत्रित करके जिसके नाम में श्मशान में ले जाकर गाड़ देवे तो वह ज्वर से पीड़ित होकर मर जाता है। इसी तरह पहिले कहे हुए मंत्र से मनुष्य की हड्डी की कील को एक हजार बार अभिमंत्रित करके जिसके घर में अथवा जिसके नाम से आधी रात के समय श्मशान में गाड़ दे उसका नाश हो जाता है। और शत्रु के मल को और बिच्छू को एक पात्र में रखकर बन्द कर दे फिर उस बर्तन के पीछे मिट्टी लीपकर भूमि में गाड़ देवे तो उसका शत्रु मल के रुकने से मरण तुल्य हो जाता है और जब उसको पृथिवी से बाहर निकाल दे तो वह कष्ट से छूट जाता है॥५७॥

शत्रुपादतलात् पांसु गृह्णीयाद् भौमवासरे ।
गोमूत्रेण तु सिंचित्वा प्रतिमां कारयेत् सुधीः ।५८॥

अथवा मंगलवार के दिन शत्रु के पैर के नीचे की मिट्टी लाकर गौ के मूत्र से उस धूलि को भिगो देवे फिर शत्रु के नाम से उस मिट्टी की एक पुतली बनावे ॥ ५८ ॥

निर्जने च नदीतीरे स्थापयेत् स्थण्डिलोपरि ।
लोहशूलं च निखनेत्तद्वक्षसि सुदारुणम् ।
तद्वामे भैरवं कृष्णं बलिभिः प्रत्यहं यजेत् ॥५९॥

फिर एकांत में अथवा नदी के किनारे पर वेदी बनाकर उस मूर्ति को उस वेदी पर स्थापित करे और उस पुतली की छाती में एक चोखा त्रिशूल लोहे का गाड़ देवे। बाद उस मूर्ति के बायें तरफ काल भैरव की मूर्ति को स्थापित करके प्रतिदिन उसकी पूजा और बलिदान किया करे ॥ ५९ ॥

एकादशवटून् तत्र परमान्नेन भोजयेत् ।

अखण्डदीपं तस्याग्रे कटुतैलेन ज्वालयेत् । ६०॥

जिस स्थान में प्रयोग करे उस स्थान में ग्यारह ११ बालकों को उत्तम अन्न का भोजन करावें और उस भैरव के मूर्ति के सम्मुख सरसों के तेलका दिन रात दीपक जलावें ॥ ६० ॥

व्याघ्रचर्मासनं कृत्वा निवसेत्तस्य दक्षिणे ।
दक्षिणाभिमुखो रात्रौ जपेन्मन्त्रमतन्द्रितः ॥६१॥

उस मूर्ति की दाहिनी ओर व्याघ्रचर्म का आसन बिछाकर दक्षिण मुख उसपर बैठ और जितेन्द्रिय हो एकाग्र मन से इस निम्न-लिखित मंत्र का जप करे ॥ ६१ ॥

ॐ नमो भगवते महाकालभैरवाय कालाग्नितेजसे अमुकं मे शत्रुं मारय पोथय पोथय हुँ फट् स्वाहा
अयुतं प्रजपेदेनं मन्त्रं निशि समाहितः ।
एकोनत्रिंशद्दिवसैर्मारणं जायते ध्रुवम् ।६२॥

रात्रि के समय सावधान होकर इस उपरोक्त मन्त्र का दश हजार जप करे । इस विधि से उन्तीस २९ दिनमें यह प्रयोग सिद्ध होता है । इस मन्त्र में जहाँ अमुक शब्द है वहाँ जिसके ऊपर प्रयोग करना हो जप करते समय उसी का नाम लेना चाहिये ॥ ६२ ॥

ॐ अस्य श्री आर्द्रपटीमहाविद्यामंत्रस्य दुर्वासा ऋषिर्गायत्री छंदः हुँ बीजं स्वाहा शक्तिः ममामुक शत्रुनिग्रहार्थे जपे विनियोगः ।

आर्द्रपटीसाधन मंत्रः—ॐ नमो भगवति आर्द्र-पटेश्वरी हरितनीलपटे कालो आर्द्रजिह्वे चाण्डालिनी

रुद्राणी कपालिनी ज्वालामुखी सप्तजिह्वे सहस्रनयने एहि एहि अमुकं ते पशुं ददामि अमुकस्य जीवं निकृन्तय एहि जीवितापहारिणि हुं फट् भूर्भुवः स्वः फट् रुधिरार्द्रवशाखादिनि मम शत्रून् छेदय छेदय शोणितं पिब हुं फट् स्वाहा। केवलं जपमात्रेण मासान्ते शत्रुमारणम्।

कृष्णाष्टमीं समारभ्य यावत् कृष्णचतुर्दशीम्॥ १॥
शत्रुनामसमायुक्तं मन्त्रं तत्त्वञ्जपेन्नरः।
रिपुपादस्थधूल्याश्च कुर्यात् पुत्तलिकां ततः॥ २॥
अजापुत्रबलिं दत्वा वस्त्रं रक्तेन संलिपेत्।
ततो गृहीत्वा तद्वस्त्रं न्यसेत् पुत्तलिकोपरि॥ ३॥
यावच्छुष्यति तद्वस्त्रं तावच्छत्रुर्विनश्यति।
ॐ अस्य श्रीकालिकाकवचस्य भैरवऋषिर्गायत्री छन्दः श्रीकालीदेवता सद्यः शत्रुहननार्थे विनियोगः।
ध्यात्वा कालीं महामायां त्रिनेत्रां बहुरूपिणीम्।
मन्त्रराजप्रभावेण नात्र कार्या विचारणा॥ ४॥

पहिले स्नानादि नित्य कर्मों से निपट कर पवित्र आसन पर वैठकर आर्द्रपटी भगवती का विनियोग करे अर्थात् 'अस्य श्री' यहाँ से लेकर "विनियोगः" यहाँ तक पढ़कर हाथ में लिये हुए जल को पृथ्वी पर छोड़ देवे। और विनियोग में तथा मन्त्र में जहाँ अमुक शब्द है वहाँ

शत्रु का नाम लेना चाहिये। विनियोग के बिना आर्द्रपटी के मन्त्र का जप करने से सिद्धि नहीं होती। यह आर्द्रपटी मन्त्र सब मन्त्रों में श्रेष्ठ और मारण प्रयोग में तत्काल फल देनेवाला है। इस आर्द्रपटी के मन्त्र का केवल एक मास तक जप करने से शत्रु का मरण हो जाती है। इस मन्त्र को कृष्ण पक्ष की अष्टमी से लेकर कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी पर्यन्त एक सौ आठ वार जप करे और अमुक के स्थान में शत्र का नाम लेवे। जब समाप्ति का दिन आवे तो शत्रु के पैर के नीचे की मिट्टी लाकर उसकी पुतली बनावे और काली के लिये बकरे का बलिदान करके रक्त में एक वस्त्र को भिगोकर उस पुतली को ढाप दे और मन्त्र का जप करता रहे, इस प्रकार से मारण का प्रयोग करे तो जब तक उसका वस्त्र सूखेगा उतने ही में शत्रु का मारण हो जायगा इसमें संशय नहीं ॥१॥ ॥२॥ ॥३॥ ॥४॥

वैरिमारणकवचम्

ॐ अस्य श्रीकालिकाकवचस्य भैरवऋषिर्गायत्री-छन्दः श्रीकालीदेवता सद्यःशत्रुहननार्थे विनियोगः।

पहिले हाथ में जल लेकर "ॐ अस्यश्री" यहाँ से लेकर "शत्रु-नाशार्थे विनियोग:" यहाँ तक पढ़कर उस जल को भूमि में छोड़ देवे फिर काली जी का ध्यान करे।

ध्यानम्

ध्यात्वा कालीं महामायां त्रिनेत्रां बहुरूपिणीम्।
चतुर्भुजां लोलजिह्वां पूर्णचन्द्रनिभाननाम् ॥ १ ॥

मायामयी श्री कालीजी का ध्यान इस प्रकार करके कि तीन नयन भय देने वाला स्वरूप, चार भुजा और लम्बी जिह्वा तथा पूर्ण चन्द्रमा के समान है मुख कान्ति जिसकी ॥ १ ॥

नीलोत्पलदलश्यामां शत्रुसंघविदारिणीम्।
नरमुण्डं तथा खड्गं कमलं वरदं तथा ॥ २ ॥

और नील कमल के समान श्यामवर्ण स्वरूप, शत्रु के समूह को नाश करने वाली, मनुष्य का कपाल और खड्ग खप्पर, और कमल चारो हाथों में धारण किये ॥ २ ॥

बिभ्राणां रक्तवसनां घोरदंष्ट्रास्वरूपिणीम् ।
अट्टाट्टहासनिरतां सर्वदा च दिगम्बराम् ॥ ३ ॥

बड़े बड़े दन्त रक्त वस्त्र को धारण किये, भयानक स्वरूप वनाये अट्टहास अर्थात् हँसी के व्याज से गर्जनेवाली और सदा नग्न रहने वाली काली जी का ध्यान करे ॥ ३ ॥

शवासनस्थितां देवीं मुण्डमालाविभूषिताम् ।
इति ध्यात्वा महादेवीं ततस्तु कवचं पठेत् ॥ ४ ॥

फिर मनुष्यों के मुण्ड की माला को पहिने मुर्दे के ऊपर आसन लगाये देवी बैठी है इस प्रकार महाकाली का ध्यान करके इस कवच को पढ़ना चाहिये ॥ ४ ॥

कवचम्

ॐ कालिका घोररूपाढ्या सर्वकामप्रदा शुभा ।
सर्वदेवस्तुता देवी शत्रुनाशं करोतु मे ॥ १ ॥

हे काली देवी भयानक रूप को धारण करने वाली संपूर्ण कामों के फल को देने वाली शुभ स्वरूप संपूर्ण देवताओं से स्तुति किये जाने वाली भगवती हमारे शत्रु को नाश करें ॥ १ ॥

ह्रां ह्रीं स्वरूपिणी चैव ह्रीं ह्रीं सं हं गिनी तथा ।
ह्रीं ह्रीं क्षैं क्षौं स्वरूपा सा सर्वदा शत्रुनाशिनी ॥२॥

ह्रीं ह्रीं स्वरूपवाली ह्रं ह्रं ह्र बीज को धारण करने वाली ह्रीं ह्रीं क्षैं क्षौं स्वरूप वाली तथा सब काल में शत्रु को नाश करने वाली भगवती हमारे शत्रु को नाश करें ॥ २ ॥

श्रीं ह्रीं ऐं रूपिणी देवी भवबन्धविमोचिनी ।
यथा शुम्भो हतो दैत्यो निशुम्भश्च महासुरः ॥ ३ ॥

संसार रूपी जाल को छुड़ाने वाली श्री ह्रीं एं स्वरूप वाली देवी जिस प्रकार सेना सहित शुम्भ निशुम्भ दैत्य का संहार किया है । उसी प्रकार हमारे प्रवल शत्रु का नाश करें ॥ ३ ॥

वैरिनाशाय वन्दे तां कालिकां शंकरप्रियाम् ।
ब्राह्मी शैवी वैष्णवी च वाराही नरसिंहिका ॥ ४ ॥

ब्राह्मी, शैवी, वैष्णवी, बाराही, नारसिंही, इत्यादि अनेक स्वरूप को धारण करने वाली शंकरजी की प्रिया कालिका को शत्रु के नाश के लिये प्रणाम करता हूँ ॥ ४ ॥

कौमारी श्रीश्च चामुण्डा खादयन्तु मम द्विषान् ।
सुरेश्वरी घोररूपा चण्डमुण्डविनाशिनी ॥ ५ ॥

कौंमारी, श्री, सुरेश्वरी और भयानक रूप को धारण करने वाली यथा चण्ड मुण्ड दैत्य को नाश करनेवाली चामुण्डा देवी हमारे वैरियों को भक्षण करें ॥ ५ ॥

मुण्डमालावृतांगी च सर्वतः पातु मां सदा ।
ह्रीं ह्रीं कालिके घोरदंष्ट्रे रुधिरप्रिये ॥ ६ ॥

ह्रीं ह्रीं स्वरूपवाली विकराल दाँतोंवाली मनुष्य के मुण्ड की माला को धारण करने वाली तथा रक्त पान में सदा प्रसन्न रहने वाली काली सब प्रकार से सदा हमारी रक्षा करो ॥ ६ ॥

मन्त्रः—रुधिरपूर्णवक्त्रे च रुधिराव्रितस्तनि मम शत्रून् खादय खादय हिंसय हिंसय मारय मारय भिन्धि भिन्धि छिन्धि छिन्धि उच्चाटय उच्चाटय द्रावय

द्रावय शोषय शोषय यातुधानीं चामुण्डे ह्रीं ह्रीं वां वीं कालिकायै सर्वशत्रून् समर्पयामि स्वाहा ।

ॐ जहे २ किरि किरि किरि किरि कटु कटु मर्दय मर्दय मोहय मोहय हर हर मम रिपून् ध्वंसय ध्वंसय भक्षय भक्षय त्रोटय त्रोटय यातुधानिका चामुण्डा सर्व जनान् राजपुरुषान राजश्रियं देहि देहि नूतनु नूतनु धान्यंजक्षय जक्षय क्षां क्षीं क्षं क्षैं क्षौं क्षः स्वाहा ।

इत्येतत् कवचं दिव्यं कथितं तव रावण ।
ये पठन्ति सदा भक्त्या तेशां नश्यन्ति शत्रवः ॥१॥
वैरिणः प्रलयं यान्ति व्याधिताश्च भवन्ति हि ।
धनहीनाः पुत्रहीनाः शत्रवस्तस्य सर्वदा ॥ २ ॥
सहस्रपठनात् सिद्धिः कवचस्य भवेत्तदा ।
ततः कार्याणि सिद्ध्यन्ति नान्यथा मम भाषितम् ॥३॥

इस प्रकार कहने के उपरान्त शिवजी बोले कि हे रावण ! इस दिव्य कवच और दिव्य मन्त्र को तुमसे वर्णन किया। जो मनुष्य भक्ति पूर्वक सदा इस कवच का पाठ करेंगे उनके शत्रुओं का नाश हो जायगा ॥ १ ॥ इस कवच के पाठ करने वाले के शत्रु रोग से पीड़ित हो नाश हो जायेंगे और धन तथा पुत्र का सुख कभी नहीं प्राप्त कर सकेगे ॥ २ ॥ इस कवच का एक हजार पाठ करने से सिद्धि मिलती है। कवच सिद्ध होने पर प्रयोग निःसन्देह सिद्ध हो जाता है ॥ ३ ॥

स्मशानांगारमादाय चूर्णं कृत्वा विधानतः ।

पादोदकेन पिष्ट्वा च लिखेल्लोहशलाकया ॥ ४ ॥
भूमौ शत्रून् हीनरूपान् उत्तराशिरसस्तथा ।
हस्तं दत्वा तद् हृदये कवचं तु स्वयं पठेत् ॥ ५ ॥

मारण कवच और मन्त्र को सिद्ध करके श्मशान का कोयला लाकर उसको पीस कर चूर्ण बनावे, फिर उसको शत्रु के पैर के जल में मिला कर कोयला को पीसे पीछे भूमि में शत्रु की कुरूप मूर्ति उस पीसे हुये कोयले को स्याही और लोहे की कलम से लिखे लिखते समय उस मूर्ति का सिर उत्तर और पैर दक्षिण की ओर बनावें ।

प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा वै तथा मन्त्रेण मन्त्रवित् ।
हन्यात् अस्त्रप्रहारेण शत्रोश्च कण्ठमक्षयम् ॥ ६ ॥
ज्वलदङ्गारलेपेन भवति ज्वरितो भृशम् ।
प्रोक्षणैर्वामपादेन दरिद्रो भवति ध्रुवम् ॥ ७ ॥

फिर उस मूर्ति के हृदय पर अपना हाथ रखकर मारण कवच को पढ़े और मारण मन्त्र को जानने वाले से उस मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा करावे और शस्त्र लेकर शत्रु की उस मूर्ति का शिर काट देवे ॥ ६ ॥ फिर उस कटी हुई मूर्ति में जलते हुए अङ्गार का लेप करने से शत्रु ज्वर से पीड़ित होकर मर जाता है और उसका बायां पैर पोंछने से वह अवश्य दरिद्र हो जाता है ॥ ७ ॥

वैरिनाशकरं प्रोक्तं कवचं वश्यकारकम् ।
परमैश्वर्यदं चैव पुत्रपौत्रादिवृद्धिदम् ॥ ८ ॥
प्रभातसमये चैव पूजाकाले प्रयत्नतः ।
सायंकाले तथा पाठात् सर्वसिद्धिर्भवेद् ध्रुवम् ॥ ९ ॥

यह कवच शत्रु को नाश करनेवाला और सबको वश करनें वाला

तथा महान् ऐश्वर्य को देनेवाला है प्रातःकाल में पूजा के समय और सायंकाल में विधि पूर्वक इसका पाठ किया करे तो अवश्य सब सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं ॥ ८ ॥ ९ ॥

शत्रुरुच्चाटनं याति देशाद् वै विच्युतो भवेत् ।
पश्चात् किङ्करतामेति सत्यं सत्यं न संशयः ॥१०॥

और सदा इस कवच का पाठ करने से शत्रु का उच्चाटन हो जाता है। यहाँ तक की वह अपना देश छोड़कर विदेश में भाग जाता है। अथवा अपने वश में होकर दास बन जाता है, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है ॥१०॥ इति उड्डीशतन्त्रे रावणशिवसंवादे मारण प्रयोग कथन नाम प्रथमः पटलः ॥ १ ॥

अथ द्वितीयः पटलः

अथ मालानिर्णयः

प्रवालवज्रमणिभिर्वश्यपौष्टिकयोर्जपेत् ।
मत्तेभदन्तमणिभिर्जपेदाकृष्टकर्मणि ॥ १ ॥
साध्यकेशसूत्रयुक्तैस्तुरङ्गदशनोद्भवैः ।
अक्षमालां परिष्कृत्य विद्वेषोच्चाटने जपेत् ॥ २ ॥

पुष्टि और वशीकरण में मूँगा तथा हीरा अथवा मणि की माला से जप करे तो आकर्षण में हाथी दाँत की माला से जप करें जिस प्रयोग में जिस प्रकार की माला लिखी है उसमें उसी को ग्रहण करना चाहिये ॥ १ ॥ उच्चाटन प्रयोग में सूत अथवा बाल पिरोय कर घोड़े के दाँत को अथवा स्फटिक की माला से जप करने से विद्वेषण और उच्चाटन प्रयोग सिद्ध होता है ॥ २ ॥

मृतस्य शुद्धशून्यस्य दशनैर्गर्दभस्य च ।

कृत्वाक्षमालां जक्षण्यं शत्रोर्मारणमिच्छता ॥ ३ ॥

शत्रु के मारण प्रयोग में अथवा सेना आदि के स्तंभन में गदहे की दाँत की माला से अथवा स्फटिक माला से जप करे तो मारण और स्तंभन प्रयोग सिद्ध होता है इसमें सन्देह नहीं ॥ ३ ॥

क्रियते शंखमालाभिर्धर्मकामार्थसिद्धये ।
पद्माक्षैः प्रजपेन्मन्त्रं सर्वकामार्थसिद्धये ॥ ४ ॥

धर्म अर्थ और काम की सिद्धि के लिये शंख की माला से जप करे और ऐश्वर्य सिद्धि के लिये तथा अन्य संपूर्ण कार्यों की सिद्धि के लिये कमल की माला से जप करे ॥ ४ ॥

रुद्राक्षमालया जप्त्वा मन्त्रः सर्वफलप्रदः ।
स्फाटिकी मौक्तिकी वापि रौद्राक्षी वा प्रवालजा ।
सरस्वती प्राप्तये च पुत्रजीवैस्तथा जपेत् ॥ ५ ॥

रुद्राक्ष की माला से जप किया हुआ मन्त्र सब प्रकार फल को देता है, और स्फटिक, मोती, मूँगा. रुद्राक्ष, और पुत्र जीव की माला से जप करने से विद्या की प्राप्ति होती है ॥ ५ ॥

पद्मसूत्र कृता रज्जुः शस्ता शान्तिकपौष्टिके ।
आकृष्टयु च्चाटयोर्वाजिपुच्छबालसमुद्भवा ॥ ६ ॥

शान्ति और पुष्टि कर्म में कमल के सूत्र में माला को पिरोवे, आकर्षण और उच्चाटन में घोड़े के पूँछ की बाल में माला को पिरोवे ॥ ६ ॥

नरस्नायुविशेषे तु मारणे रज्जुरुत्तमा ।
अन्यासांचाक्षमालानांरज्जुः कार्पासिकीमता ॥७॥

और मारण प्रयोग में मनुष्य की स्नायु में अर्थात् हड्डी में रहने वाले पतले तागे में माला को पिरोवे, और दूसरे कामों में कपास

के सूत में माला को पिरोय कर प्रयोग करने से तत्काल सिद्धि होती है ॥ ७ ॥

सप्तविंशति संख्याकैः कृता सिद्धिं प्रयच्छति ।
अक्षैस्तु पंचदशभिरभिचारफलप्रदा ॥ ८ ॥

सत्ताईस दाने की माला सिद्धि देनेवाली होती है, अभिचार कर्म में पन्द्रह दाने की माला फल देनेवाली होती है । जिस कर्म में जैसी माला का ग्रहण है वैसाही माला से प्रयोग करना चाहिये ॥ ८ ॥

अक्षमाला विनिर्दिष्टा मन्त्रादौ तत्वदर्शिभिः ।
अष्टोत्तरशतेनैव सर्वकर्मसु पूजिता ॥ ९ ॥

और एक सौ आठ दाने की माला सब कामों में सिद्धि देने वाली होती है । ऐसी तन्त्र शास्त्र के जानने वाले पण्डितों की सम्मति है ॥ ९ ॥

जपेत् पूर्वमुखं वश्ये दक्षिणं चाभिचारके ।
पश्चिमे धनदं विद्यादुत्तरं शांतिकं भवेत् ॥
आयुष्यरक्षां शान्तिं च पुष्टिं वापि करिष्यति ॥ १० ॥

वशीकरण प्रयोग में पूर्व मुख बैठे अभिचार में दक्षिण मुख, ऐश्वर्य की इच्छा वाले पश्चिम मुख विद्या, आयुष्य, शान्ति और पुष्टि आदि कर्मों में उत्तर मुख बैठ कर जप करना चाहिये ॥ १० ॥

अथ जपलक्षणम्

यं श्रूयतेऽन्यः स तु वाचिकः स्याद् ,
उपांशुसंज्ञो निजदेहवेद्यः ।
निष्कम्पदन्तोष्ठमथाक्षराणां,
यच्चिन्तितं स्यादिह मानसाख्यः ॥ ११ ॥

वाचिक, उपांशु, मानसिक, यह तीन प्रकार के जप होते हैं जिस

मन्त्र का उच्चारण करना दूसरे को सुनाई देवे उसको वाचिक कहते हैं और जो अपने तथा दूसरे को भी न सुनाई पड़े उसको उपांशु कहते हैं और जिसमें केवल दाँत ओठ जिह्वा हिलती हुई दिखलाई देवे और अपने मनमें जप करे उसको मानसिक जप कहते हैं यह तीन प्रकार के जप प्रयोगों के लिये उपयोगी हैं इसमें सन्देह नहीं ॥ ११ ॥

पराभिचारे किल वाचिकः स्यात्,
उपांशुरुक्तोऽप्यथ शान्तिपुष्टयोः ।
मोक्षेषु जापः किल मानसाख्य—
स्त्रिधा जपः पापनुदे तथोक्तः ॥ १२ ॥

मारण आदि क्रियाओं में वाचिक जप करे अर्थात् मन्त्र को जोर से कहे, शान्ति और पुष्टि कर्म में उपांसु अर्थात् जो दूसरे को सुनाई न देवे और मोक्ष तथा ज्ञान प्राप्ति के लिये मानस जप करे यह तीनों प्रकार का जप पाप का नाश करने वाला होता है ॥ १२ ॥

कृष्णजीरकचूर्णेन अञ्जिताक्षो न पश्यति ।
तक्रेण क्षालयेच्चक्षुः सुस्थो भवति घोटकः ॥१३॥

काले जीराकी बुकनी बनाकर घोड़े की आँख में अँजन लगावे तो कुछ दिनों में घोड़ा अन्धा हो जाता है यदि उसकी आँख को मण्ठे से धो देवे तो फिर पहिले के समान उसे दिखाई देने लगे ॥१३॥

घ्राणे छुछुन्दरीचूर्णे दत्ते पतति घोटकः ।
स्वस्थश्चन्दनपानेन नासायां तु न संशयः ॥१४॥

छुछुन्दरी का चूर्ण घोड़े की नाक में डाल दे तो वह मूर्छित होकर गिर जावे और फिर पानी में चन्दन मिलाकर उसकी नाक में जल दे तो वह पहिले के समान स्वस्थ हो जाता है ॥ १४ ॥

अश्वास्थिकीलमश्विन्यां कुर्यात् सप्तांगुलं पुनः ।

निखनेदश्वशालायां मारयत्येव घोटकान् ॥१५॥

अश्विनी नक्षत्र में घोड़े की हड्डी लाकर उसकी सात अंगुल का बांदा बनावे और उसको जिसकी घुड़साल में बाँध दे तो उसके सब घोड़े मर जावें इसमें सन्देह नहीं है ॥ १५ ॥

अश्वमारण मन्त्रः—ओं पच पच स्वाहा।

अयुतजपात् सिद्धिः।

इस मन्त्र का दश हजार जप करने से अश्व मारण सिद्ध होता है।

संग्राह्य पूर्वफाल्गुन्यां बदरीकाष्ठकीलकम्।
दासगृहेऽष्टांगुलं च निखनेन्मत्स्यनाशकम् ॥१६॥

और इसी मन्त्र से उस कील को अभिमन्त्रित करके यदि घुड़साला में गाड़ देवे तो घोड़े मर जाते हैं बिना मन्त्र को सिद्ध किये प्रयोग नहीं करना चाहिये। पूर्वाफालगुनी नक्षत्र में बैर के काठ की आठ अंगुल की कील बनाकर जिस मल्लाह के घर में गाड़ देवे तो उसकी सब मछलियाँ नष्ट हो जाती हैं ॥ १६ ॥

मत्स्यनाशनमन्त्रः—ॐ जले पच पच स्वाहा।

इत्यनेन मन्त्रेणायुतजपात् सिद्धिः।

इस मन्त्र का पहिले दश हजार जप करे तब मन्त्र सिद्ध होता है और इसी मन्त्र से अभिमन्त्रित करके कील को गाड़ देने से मछलियों का नाश हो जाता है इसमें संशय नहीं।

गृहीत्वा पूर्वफाल्गुन्यां जातीकाष्ठस्य कीलकम् ॥
अष्टांगुलप्रमाणं तु निखन्याद्रजके गृहे।
शताभिमन्त्रितं कृत्वा तस्य वस्त्राणि नाशयेत् ॥१७॥

पूर्वाफालगुनी नक्षत्र में चमेली की आठ अंगुल की लकड़ी लेकर

उसका कील बनावे और निम्नलिखित मन्त्र से अभिमन्त्रित करके धोबी के घर में गाड़ देवे तो उसके सब वस्त्र नष्ट हो जाते हैं ॥१७॥

अथमन्त्रः--ॐ कुम्भं स्वाहा अयुतजपात् सिद्धिर्भवति ।

दश हजार जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है बिना मन्त्र को सिद्ध किये प्रयोग को नहीं करना चाहिये नहीं तो सिद्धि नहीं होगी ॥

**मधुकाष्ठस्य कीलं तु चित्रायां चतुरंगुलम् ।
निखनेत्तैलशालयां तैलं तत्र विनश्यति ॥१८॥**

चित्रा नक्षत्र में महुआ का काष्ठ लाकर चार अंगुल की कील बना लेवे फिर उस कील को निम्नलिखित मन्त्र से एक हजार बार अभिमन्त्रित करके तेली जहाँ पर तेल पेरता हो वहाँ गाड़ देने से उसका सब तेल नष्ट हो जावे ॥ १८ ॥

तैलनाशनमन्त्रः--ॐ "दह दह स्वाहा" इत्यनेन सहस्रसंख्याकजपः ।

इस मन्त्र का एक हजार जप करने से मन्त्र सिद्ध होता है बिना मन्त्र सिद्ध किये प्रयोग नहीं करना चाहिये ।

**गन्धकं चूर्णितं तत्र निक्षिपेज्जलमिश्रितम् ।
नश्यन्ति सर्वशाकानि शोषाण्यल्पबलानि च॥१९॥**

गन्धक के चूर्ण को जल में मिलाकर शाक पर छिड़क देवे तो बिना परिश्रम के उसका सब शाक सूखकर नष्ट हो जावे । यह प्रयोग बिना मन्त्र के सिद्ध हो जाता है इसमें कुछ संशय नहीं है ॥ १९॥

निक्षिपेदनुराधायां जम्बुकाष्ठस्य कीलकम् ।

अष्टांगुलं गोपगेहे गोदुग्धं परिनश्यति ॥२०॥

अनुराधा नक्षत्र में जामुन के कष्ठ को आठ अंगुल की कील बनाकर अहीर के घर में गाड़ देवे तो उसका सब दूध नष्ट हो जाता है यह प्रयोग बिना मन्त्र के सिद्ध होता है। इसमें सन्देह नहीं करना चाहिये ॥ २० ॥

षोडशांगुलकं कीलं कृत्तिकायां सितार्कजम् ।
शौण्डिकस्य गृहे क्षिप्तं मदिरां नाशयत्यलम् ॥२१॥

कृत्तिका नक्षत्र में सफेद मंदार की लकड़ी लेकर उसकी सोलह अंगुल की कील बना लेवे और जिस कलवार के घर में गाड़ देवे उसकी सब मदिरा नष्ट हो जावे यह बिना मन्त्र के सिद्ध है ॥ २१ ॥

नवांगुलं पूगकाष्ठकीलकं निक्षिपेद् गृहे ।
ताम्बूलिकस्य क्षेत्रे वा ऋक्षे शतभिषाऽह्वये ।
तदा तस्य च ताम्बूलं नाशयत्याशु निश्चितम् ॥२२॥

शतभिषा नक्षत्र में सुपारी की लकड़ी की आठ अंगुल की कील बनाकर जिस तंबोली के घर में अथवा जिसके खेत में गाड़ देवे तो उसका सब पान नष्ट हो जावै इसका सन्देह नहीं है ॥ २२ ॥

शस्यस्य नाशनं चाथ कथयामि समासतः ।
येनैव कृतमात्रेण सस्यनाशो भविष्यति ॥२३॥

श्री शिवजी बोले कि हे राक्षसाधिप अब मैं अन्न नाश की विधि संक्षेप में तुमसे कहता हूँ। जिस क्रिया को करने मात्र से सम्पूर्ण धान्य नष्ट हो जाता है, इसमें कुछ संशय नहीं है ॥ २३ ॥

इन्द्रवज्रं पतेद् यत्र गृहीत्वा मृत्तिकां ततः ।
तन्मृत्तिकां समादाय वज्रं कृत्वा विचक्षणः ॥२४॥

क्षेत्रे यस्मिन रोपयेत्तत् सस्यं सर्वं विनश्यति ।
इदं मन्त्रं समुच्चार्य मन्त्रेणानेन मंत्रयेत् ॥२५॥

जहाँ पर विजली गिरी हो वहाँ की मिट्टी को लाकर उसका वज्र बनावे और निम्नलिखित मन्त्र से उस मिट्टी को अभिमन्त्रित करके जिसके खेत में गाड़ देवे उसके खेत का सब अन्न नष्ट हो जाता है।२५।

शस्यनाशनमन्त्रः-ॐ नमोवज्रपाताय सुरपति-राज्ञापयति हुँ फट् स्वाहा ।

इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके उस कील को गाड़े तो धान्य का नाश हो जावे, दश हजार जप करने से यह मन्त्र सिद्ध होता है ॥

इति श्रीउड्डीशतन्त्रे रावणशिवसंवादे धान्यादिनाशकथनं नाम द्वितीयः पटलः ॥ २ ॥

अथ तृतीयः पटलः

मोहाभिधानम्

ईश्वर उवाच

अथाग्रे कथयिष्यामि प्रयोगं मोहनाभिधम् ।
सद्यः सिद्धिकरं नृणां शृणु रावण यत्नतः ॥ १ ॥

श्रीशिवजी बोले हे राक्षसराज ! अब मैं संक्षेप से मोहन प्रयोग को कहता हूँ सावधान होकर सुनो जो प्रयोग मनुष्यों को शीघ्र ही सिद्धि देने वाला है ॥ १ ॥

सिन्दूरं कुङ्कुमं चैव गोरोचनसमन्वितम् ।
धात्रीरसेन सम्पिष्ट्वा तिलकं लोकमोहनम् ॥ २ ॥

आँवले के रस में सेंदुर केसर और गोरोचन पीसकर तिलक करने से देखनेवाले सब लोग मोहित हो जाते हैं ॥ २ ॥

सहदेव्या रसेनैव तुलसीबीजचूर्णकम् ।
रवौ यस्तिलकं कुर्यात् मोहयेत् सकलं जगत् ॥ ३ ॥

रविवार के दिन सहदेवी के रस में तुलसी का बीज पीस कर तिलक करे तो सब को मोहित कर लेवे ॥ ३ ॥

मनश्शिलां च कर्पूरं पेषयेत् कदलीरसैः ।
तिलकं मोहनं नृणां नान्यथा मम भाषितम् ॥ ४ ॥

केले के रस में मैनसिल और कर्पूर मिलाकर तिलक करे तो सब लोग अवश्य मोहित हो जाते हैं ॥ ४ ॥

हरितालं चाश्वगन्धां पेषयेत् कदलीरसैः ।
गोरोचनेन संयुक्तं तिलकं लोकमोहनम् ॥ ५ ॥

केला के रस में हरताल, असगंध, और गोरोचन को एक में मिला कर तिलक करने से अपने आप सब लोग मोहित हो जाते हैं ॥५॥

शृङ्गीचन्दनसंयुक्तं वचाकुष्ठसमन्वितम् ।
धूपं देहे तथा वस्त्रे मुखे तद्यात् विशेषतः ॥ ६ ॥
पशुपक्षिप्रजानां च राज्ञां मोहनकारकम् ।
ताम्बूलमूलतिलकं लोकमोहनकारकम् ॥ ७ ॥

काकड़ासिंगी, चन्दन, वच, और कूट को एक में मिलाकर उसका धूप कपड़े में शरीर पर तथा मुख पर देवे तो उस आदमी को देखते ही पशु पक्षी मनुष्य राजा आदि सब मोहित हो जाते हैं ॥ ६ ॥ इसी प्रकार पान की जड़ का तिलक लगावे तो भी सबको मोहित कर सकता है ॥ ७ ॥

सिन्दूरं च वचां श्वेतां ताम्बूलरसपेषिताम् ।
अनेनैव तु मन्त्रेण तिलकं लोकमोहनम् ॥ ८ ॥

पान के अर्क में सिन्दूर और सफेद वच को मिला कर मोहन मन्त्र से अभिमन्त्रित करके तिलक करे तो उसको देखकर सब लोग मोहित हो जाते हैं विना मन्त्र सिद्धि किये प्रयोग सिद्ध नहीं होता ॥ ८ ॥

अपामार्गो भृङ्गराजो लाजा च सहदेविका ।
एभिस्तु तिलकं कृत्वा त्रैलोक्यं मोहयेन्नरः ॥ ९ ॥

चिचिढ़ा, भृङ्गराज (भाँगरा) लज्जावन्तीं और सहदेवीको पीस कर एक में मिलावे उसी मोहन मन्त्र से अभिमन्त्रित करे तो उसे देख सब लोग मोहित हो सकते हैं ॥ ९ ॥

श्वेतदूर्वा गृहीत्वा तु हरितालं च पेषयेत् ।
कृतं तु तिलकं भाले दर्शनान्मोहकारकम् ॥ १० ॥

सफेद दूब और हरताल को एक में मिलाकर मोहन मन्त्र से अभिमन्त्रित करके तिलक करने से सब लोग मोहित हो जाते हैं ॥ १० ॥

बिल्वपत्रं गृहीत्वा तु छायाशुष्कं तु कारयेत् ।
कपिलापयसा युक्तं वटीं कृत्वा तु गोलकीम् ।
एभिस्तु तिलकं कृत्वा मोहयेत् सर्वतो जगत् ॥ ११ ॥

विल्वपत्र को लेकर छाया में सुखावे जब वह सूख जाने तब कपिला गौ के दूध में उसे पीसकर गोली बनाले और उसको मोहन मन्त्र से अभिमन्त्रित करके तिलक करने से समस्त संसार को मोहित कर सकता है ॥ ११ ॥

मोहनमन्त्रः—ॐ उड्डामरेश्वराय सर्वजगन्मो-

हनाय अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं फट् स्वाहा ॥

इस मन्त्र को एक लक्ष जप करने से सिद्ध होने पर सात बार अभिमन्त्रित करके प्रयोग करे।

इति श्री उड्डीशतन्त्रे रावणशिवसंवादे मोहनप्रयोगवर्णनं नाम तृतीयः पटलः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थः पटलः ॥ ४ ॥

स्तंभनप्रयोगः

अथाग्रे सम्प्रवक्ष्यामि प्रयोगं स्तंभनाभिधम् ।
यस्य साधनमात्रेण सिद्धिः करतले भवेत् ॥ १ ॥

श्रीमहादेवजी कहते हैं—हे रावण ! अब स्तंभन प्रयोग को कहता हूँ जिसको साधन करने से सिद्धि हाथ में हो जाती है इसमें किसी प्रकार का संशय नहीं करना चाहिये ॥ १ ॥

जलस्तम्भनम्

तत्रादौ कथयिष्यामि जलस्तंभनमुत्तमम् ।
कुलीरनेत्रदंष्ट्राश्च रुधिरं मांसमेव च ॥ २ ॥
हृदयं कच्छपस्यैव शिशुमारवसा ततः ।
बिभीतकस्य तैलेन सर्वाण्येकत्र सिद्धयेत् ॥ ३ ॥
एभिः प्रलेपनं कुर्याज्जले तिष्ठेद्यथासुखम् ।
उरगस्य वसा ग्राह्या नक्रस्य नकुलस्य च ॥ ४ ॥
डुण्डुभस्य शिरोग्राह्यं सर्वाण्येकत्र कारयेत् ।
बिभीतकस्य तैलेन सिद्धं कुर्याद् यथाविधि ॥ ५ ॥

तैलं पक्त्वाऽयसे पात्रे कृष्णाष्टम्यां समाहितः ।
शंकरस्यार्चनं कृत्वा मूर्ध्नि कृत्वा प्रदक्षिणाम् ॥ ६ ॥
अष्टाधिकसहस्रेण चाज्यं होमं ततश्चरेत् ।
लेपं कृत्वाऽथ मन्त्रेण ततः सिद्धिः प्रजायते ॥७॥

अब सबसे पहिले जल का स्तंभन कहता हूँ सावधान होकर सुनो केकड़ा की टाँग, दाँत, और उसका रक्त तथा कछुआ का हृदय (कलेजा) और सुइस की चर्वी और भिलावे का तेल इन सबको एक में मिलाकर पकावे जब पक्काहो जावे तो शरीर पर उसका लेप करने से जलके ऊपर सुख पूर्वक ठहरा रहेगा अर्थात् डूब नहीं सकता । सर्प नक्र, और, नकुल की चर्वी डुण्डुभ का शिर भिलावे के तेल में पका लेवे जब वह पक जावे तब उसे लोह के बर्तन में रख देवे, फिर कृष्ण-पक्ष की अष्टमी के दिन शिवजी की पूजा करके उनको प्रणाम करे और स्तंभन के मन्त्र से एक हजार आठ बार घी से हवन करके उसी मन्त्र को पढ़ता हुआ इस तेल को शरीर पर लेप करने से सिद्धि प्राप्त होती है ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥

अग्निस्तम्भनम्

मण्डूकस्य वसा ग्राह्या कर्पूरेणैव संयुता ।
लेपमात्राच्छरीराणामग्निस्तभः प्रजायते ॥ ८ ॥

मेढ़क की चर्वी में कपूर मिलाकर शरीर पर लेप करे अग्नि का भय नहीं होता अर्थात् अग्नि का स्तभन हो जाता है इसमें कुछ भी संशय नहीं है यह प्रयोग बिना मन्त्र के सिद्ध है ॥ ८ ॥

कुमारी रसलेपेन किंचित् वस्तु न दह्यते ।
अग्निस्तम्भनयोगोऽयं नान्यथा मम भाषितम् ॥९॥

घीकुआर के रस का लेप कर देने से कोई भी वस्तु आग में नहीं जलती । हे रावण ! मेरा कहा हुआ यह प्रयोग मिथ्या नहीं है ॥ ९ ॥

आज्यं शर्करया पीत्वा चर्वयित्वा च नागरम् ।
तप्तं लोहं मुखे क्षिप्तं न वक्त्रं दह्यते क्वचित् ॥१०॥

पहिले शक्कर को जल में मिलाकर खाजावे पीछे सोंठ चबा लेवे इसके बाद जलता हुआ आग का अँगारा मुख में रख लेने से मनुष्य का मुख नहीं जल सकता ॥ १० ॥

स्तंभनमन्त्रः—ॐ नमो भगवते जलं स्तंभय स्तंभय हूँ फट् स्वाहा ॥

पहिले इस मन्त्र को एक लाख जप करके सिद्ध कर ले पश्चात प्रयोग करने से क्रिया सिद्ध होती है ॥

आसनस्तंभनम्

श्वेतगुंजाफलं क्षिप्त्वा नृकपालं तुमृत्तिकाम् ।
बलिं दत्वा तु दुग्धस्य तस्य वृक्षो भवेद्यदा ॥११॥
तस्य शाखा लताग्राह्या यस्याग्रेतां विनिक्षपेत् ।
तस्य स्थाने भवेत् स्तंभः सिद्धियोग उदाहृतः ॥१२॥

मृत मनुष्य की खोपड़ी में मिट्टी भर कर उसमें सफेद घुंघुची का बीज बो देवे और गौ के दूध से उस बीज को सींचता रहे जब वह जमकर वृक्ष हो जावे तब उसकी डाल पत्र, और पुष्प आदि को लेकर जिसके सम्मुख छिड़क दे वह वहीं पर स्तंभित हो जावे, यह सिद्धप्रयोग है इसमें सन्देह नहीं करना चाहिये ॥ १२ ॥

आसनस्तंभनमन्त्रः—ॐ नमोदिगम्बराय अमुकस्यासनं स्तंभनं कुरु कुरु स्वाहा ।

इस मन्त्र का दस हजार जप करने से सिद्धि होती है एक हजार जप करके तब प्रयोग करे इस मन्त्र में जहाँ अमुक शब्द है वहाँ जिसके ऊपर प्रयोग करना हो उसका नाम लेना चाहिये ।

बुद्धिस्तंभनम्

उलूकस्य कपेर्वापि ताम्बूलं यस्य दापयेत् ।
विष्ठां प्रयत्नतस्तस्य बुद्धिस्तंभः प्रजायते ॥१३॥

उल्लू अथवा बन्दर की विष्ठा को पान में रखकर जिस पुरुष को खिलादे उसकी बुद्धि का स्तंभन हो जाता है ॥ १३ ॥

पुष्यार्केऽह्नि समादाय खरमञ्जरीमूलकम् ।
पिष्ट्वा लिपेच्छरीरेषु शस्त्रस्तंभः प्रजायते ॥१४॥

पुष्य नक्षत्र की संक्रान्ति में खरमञ्जरी की जड़ ले आवे फिर उसको रगड़ कर शरीर पर उसका लेप करले तो शस्त्र स्तंभन हो जाता है अर्थात् कितने भी चोखे शस्त्र से शरीर पर घाव नहीं हो सकता ॥ १४ ॥

खर्जूरी मुखमध्यस्थः कटिबद्धा च केतकी ।
भुजदण्डस्थिते चार्के सर्वशस्त्रनिवारणम् ॥१५॥

मुख के मध्य में खजूर और कमर में केतकी तथा आक (मन्दार) की जड़ की भुजा पर बाँध लेने से अनेक प्रकार के शस्त्रों का निवारण हो जाता है ॥ १५ ॥

गृहीत्वा रविवारे तु बिल्वपत्रं च कोमलम् ।
लेपः शस्त्रस्तंभकश्च पिष्ट्वा विषसमं तथा ॥१६॥

रविवार के दिन कोमल कोमल बेल के पत्तों को कमल नाल के साथ पीस कर शरीर पर लेप करने से शस्त्र का स्तंभन हो जाता है ॥ १६ ॥

शस्त्रस्तंभनमन्त्रः—ॐ नमो अघोररूपाय शस्त्र-स्तंभनं कुरु कुरु स्वाहा ।

यह मन्त्र दश हजार जप करने से सिद्ध होता है। विना मन्त्र सिद्धि के प्रयोग सिद्ध नहीं होता।

मेघस्तंभनम्

इष्टकाद्वयमादाय सम्पुटं कारयेन्नरः।
चिताङ्गारेण संलेख्य भूस्थं स्तंभनमेघकम् ॥१७॥

चिता के कोयले से दो ईंटा का पुट वनाकर उस पर मेघ लिखे और स्तंभ मन्त्र से उस पुट को अभिमन्त्रित करके उसको पृथ्वी में गाड़ देवे तो मेघ का स्तभन हो जावै अर्थात् मेघ एक जगह ठहर कर पानी की वर्षा करे॥ १७॥

निद्रास्तम्भनम्

मधुना बृहतीमूलैरञ्जयेल्लोचनद्वयम्।
पिष्ट्वा वा तस्य नस्येन निद्रास्तम्भं भवेद् ध्रुवम्॥१८॥

भटकटैया की जड़ को शहद में पीसकर स्तंभन मन्त्र से अभिमन्त्रित करके नास लेवे अथवा दोनों आँखों में आँजन लगा लेवे तो निन्द्रा का स्तंभन हो जावे अर्थात् नींद नहीं आती है॥ १८॥

उष्ट्रस्यास्थि चतुर्दिक्षु निखनेद् भूतले ध्रुवम्।
गोमहिष्यादिकस्तंभे सिद्धयोग उदाहृतः॥१९॥

जहाँ गौ भैंस रहती हों वहाँ चारों ओर खोदकर ऊँट की हड्डी गाड़ देवे तो अवश्य गौ भैंस आदि का स्तंभन हो जावे यह सिद्ध प्रयोग है इसमें सन्देह नहीं करना चाहिये॥ १९॥

उष्ट्रलोमं गृहीत्वा तु पशूपरि विनिक्षिपेत्।
पशूनां भवति स्तंभः सिद्धयोग उदाहृतः॥२०॥

पशुओं के ऊपर ऊँट का रोम डाल देने से पशुओं का स्तम्भन हो जाता है यह भी सिद्ध प्रयोग है॥ २०॥

हरितालरसेनैव रविपत्रं समालिखेत् ।
अस्य नामोद्यानमध्ये ईशाने स्थापयेत्ततः ।
मुखस्तंभनकं तस्य नान्यथा मम भाषितम् ॥२१॥

आक (मदार) के पत्ते पर हरताल के रस से जिसका नाम लिख-कर वगीचा में ईशान कोण की तरफ गाड़ देवे तो उसके मुख का स्तंभन हो जाता है। हे रावण ! हमारा कहना मिथ्या नहीं है॥ २१॥

सैन्यस्तंभनम्

रविवारे गृहीत्वा तु श्वेतगुञ्जाफलं शुभम् ।
निखनेच्च श्मशाने वै पाषाणं तत्र दापयेत् ॥२२॥
अष्टौ च योगिनी पूज्यारौद्री माहेश्वरी तथा ।
वाराही नारसिंही च वैष्णवी च कुमारिका ॥२३॥
लक्ष्मी ब्राह्मी च सम्पूज्या गणेशो बटुकस्तथा ।
क्षेत्रपालः सदापूज्यः सैन्यस्तंभो भविष्यति ॥२४॥
पृथक्पृथग् बलिं दत्वा दशानामविभागतः ।
मद्यं मांसं तथा पुष्पं धूपं दीपावली क्रिया ॥२५॥

रविवार के दिन सफेद घुंघची का फल श्मशान में गाड़ कर एक पत्थर से उसको दवादे फिर आठों योगिनी रौद्री, माहेश्वरी, बाराही, नारसिही, वैष्णवी, कुमारी, लक्ष्मी, ब्रह्माणी और गणेश, बटुक भैरव, क्षेत्रपाल तथा दशदिक्पालों की चन्दन, पुष्प, धूप दीप, आदि उपचारों से पूजा करके मदिरा और मांस का वलिदान उन लोगों के लिये अलग अलग देवे फिर स्तंभन मन्त्रका दश हजार जप करे तो सेना का स्तंभन हो जाता है। यह मंत्र दश हजार जप करने से सिद्ध होता है। कलियुग में पूर्व संख्या का चौगुना करना चाहिये ॥२२॥२३॥२४॥२५॥

सैन्यस्तंभनमन्त्रः—ॐ नमः कालरात्रित्रिशूल-धारिणी मम शत्रुसैन्यस्तंभनं कुरु कुरु स्वाहा ।

प्रयोग काल में सिद्धि पर्यन्त इसी उपरोक्त मंत्र का जप करना चाहिये ॥

सैन्यपलायनकरणम्

भौमवारे गृहीत्वा तु काकोलूकस्य तु पक्षकौ ।
भूर्जपत्रे लिखेन्मन्त्रं शत्रु नाम समन्वितम् ॥२६॥
गोरोचनं गले बध्वा काको लूकस्य पक्षकौ ।
सेनानी सन्मुखं गच्छेन्नान्यथा ममभाषितम् ॥२८॥
शब्दमात्रं सैन्यमध्ये पलायन्ते सुनिश्चितम् ।
राजा प्रजाजनश्चापि नान्यथा मम भाषितम् ॥३८॥

मंगलवार के दिन उल्लू और कौआ के परसे भोजपत्र के ऊपर गोरोचन से पलायन मंत्र को शत्रु के नाम सहित लिखे फिर उस पर के सहित भोजपत्र का यन्त्र बनाकर गले में बाँध ले और जिस सेना के सन्मुख चला जायगा तो केवल उसके शब्द से राजा प्रजा सेना सहित अवश्य भाग जायँगे । इसमें सन्देह नहीं है ॥२६॥२७॥२८॥

पलायनमन्त्रः—ॐ नमो भयंकराय खड्ग-धारिणे मम शत्रुसैन्यं पलायनं कुरु कुरु स्वाहा ।

इस मन्त्र की सिद्धि दशहजार जप करनेसे होती है बिना मन्त्रसिद्ध किये प्रयोग नहीं करना चाहिये अन्यथा सिद्धि नहीं होती ।

इति उड्डीशतन्त्रे रावणशिवसंवादे चतुर्थः पटलः ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमः पटलः

शिव उवाच

अथातः संप्रवक्ष्यामि योगं विद्वेषणाभिधम् ।
महाकौतुकरूपं च शृणु रावण यत्नतः ॥ १ ॥

श्रीशिवजी बोले हे रावण ! अब मैं महाकौतुक देने वाले विद्वेषण प्रयोग का वर्णन करता हूँ । तुम बड़े प्रयत्न से सावधान होकर सुनो यह प्रयोग सब प्रकार की सिद्धि को देने वाला और शत्रुञ्जय स्वरूप है ॥ १ ॥

गजदन्तं गृहीत्वा च सिंहदन्तं तथैव च ।
पेषयेन्नवनीतेन तिलकं द्वेषकारकम् ॥ २ ॥

नवनीतघृत अर्थात् मक्खन में हाथी और सिंह के दाँत का चूर्ण बनाकर हाथ से मिलावे उसको विद्वेषण मन्त्र से अभिमन्त्रित करके उसका तिलक करे तो अपने आप विद्वेषण हो जाता है ।

एकहस्ते काकपक्षमुलूकस्य करेऽपरे ।
मन्त्रयित्वा मेलयित्वा कृष्णसूत्रेण वेष्टयेत् ॥ ३ ॥

एक हाथ में कौआ का पंख दूसरे हाथ में उल्लू का पंख लेकर दोनों को विद्वेषण मन्त्र से अभिमन्त्रित करके उन दोनों पंखों को एक में मिलाकर काले तागे से बाँध देवे ॥ ३ ॥

अञ्जलीं च जले चैव तर्पयेत् हस्तपक्षकः ।
एवं सप्तदिनं कुर्यादष्टोत्तरशतं जपेत् ॥ ४ ॥

फिर उन दोनों पंखों को हाथ से पकड़ कर जलसे तर्पण करे इसी प्रकार सात दिनतक विद्वेषण मन्त्र पढ़कर एकसौ आठ वार तर्पण करे तो अपने आप विद्वेषण हो जावे ॥ ४ ॥

गृहीत्वा गजकेशं च सिंहकेशं तथैव च ।
गृहीत्वा पादपांसुं च पुत्तलीं निखनेद् भुवि ॥५॥
अग्निस्तस्योपरि स्थाप्यो मालतीकुसुमं हुनेत् ।
विद्वेषं कुरुते नूनं नान्यथा च मयोदितम् ॥ ६ ॥

जिनपर विद्वेषण करना हो उसके पैर के नीचे की मिट्टी लाकर पुतली बनावें उस पुतली में हाथी और सिंहका रोम लपेट कर उसे पृथ्वी में गाड़ देवे और उसके ऊपर वेदी बनाकर मालती के पुष्प से विद्वेषणमन्त्र के द्वारा हवन करे तो अवश्य विद्वेषण हो जावे ॥५॥६॥

ब्रह्मदण्डी समूला च काकजंघा समन्विता ।
जातिपुष्परसैर्भाव्या सप्तरात्रं पुनः पुनः ॥ ७ ॥
ततो मार्जारमूत्रेण सप्ताहं भावयेत् पुनः ।
एष धूपः प्रदातव्यो शत्रुगोत्रस्य मध्यतः ॥ ८ ॥
यथा गन्धं समाघ्राति तथा सर्वैः समं कलिः ।
महद्विद्वेषणं याति सुहृद्भिर्बान्धवैः सह ॥ ९ ॥

ब्रह्मदण्डी जड़ के सहित और कौआगोड़ी को सात दिन तक चमेली के फूल के रस में भिगोवे और उसमें से निकाल कर फिर सात दिन तक बिड़ाल के मूत्र में भिगोवे पीछे शत्रु के गृह के समीप इसका धूप देवे तो जो इस धूप के सुगन्ध को सूँघेगा उसमें अवश्य विद्वेषण हो जायगा ॥ ७॥८॥९ ॥

गजकेसरिणो दन्तान्नवनीतेन पेषयेत् ।
यन्नाम्ना हूयते चाग्नौ तयोर्विद्वेषणं भवेत् ॥१०॥

मक्खन में हाथी दाँत और सिंह के दाँत का चूर्ण मिलाकर जिसके नाम लेकर विद्वेषण मन्त्र से अग्नि में उसका हवन करे उसी में विद्वेषण हो जावे ॥ १० ॥

गृहीत्वा माहिषं केशमश्वकेशेन संयुतम् ।
सभायां दीयते धूपो विद्वेषो जायते क्षणात् ॥११॥

भैंसे और घोड़े का बाल एक में मिलाकर जिस सभा में इसका धूप दे उस सभा में क्षण भर में विद्वेषण हो जावे यह प्रयोग बिना मन्त्र के सिद्ध है इसमें सन्देह नहीं करना चाहिये ॥ ११ ॥

मार्जार्या मूषिकायाश्च विष्ठामादाय यत्नतः ।
विद्वेष्य पादतलयोर्मृदमादाय मेलयेत् ॥१२॥
जपेन्मंत्रशतं कुर्यान्नरपुत्तलिकां शुभाम् ।
नीलवस्त्रेण संवेष्ट्य तद्गृहे निखनेद्यदि ॥१३॥
विद्वेषो जायते शीघ्रं बन्धूनां पितृपुत्रयोः ॥१४॥

जिसमें विद्वेषण करना हो उसके पैर के नीचे की मिट्टी लाकर उसमें बिल्ली का विष्ठा मिलावे उसकी पुतली बनाकर उस पुतली को नीले रंग के कपड़े में लपेट कर विद्वेषण मन्त्र से उसे अभिमन्त्रित करे और जिसमें विद्वेषण करना हो उसके घर में गाड़ देवे तो शीघ्र ही परिवार सहित उसमें विद्वेषण हो जावे ॥ १२ ॥ १३ ॥

एकहस्ते काकपक्षमुलूकस्य करे परे ।
मन्त्रयित्वा मेलयित्वा कृष्णसूत्रेण वेष्टयेत् ॥१४॥
यद्गृहे निखनेद्भूमौ विद्वेषस्तस्य जायते ।
पुनश्च सुस्थीकरणं घृतगुग्गुलुधूपतः ॥१५॥

एक हाथ में कौवा का पंख दूसरे हाथ में उल्लू का पंख लेकर विद्वेषण मन्त्र से उसे अभिमन्त्रित करे फिर दोनों को एक में मिलाकर काले सूत से बाँध दे और जिस पर विद्वेषण करना हो उसके घर में खोदकर गाड़ देवे तो पिता पुत्र में विद्वेषण हो जावे और जब शान्त करना हो तब उसको निकाल कर गूग्गुल का धूप दे देवे तो पहिले के समान शान्त हो जावे ॥ १४ ॥ १५ ॥

विद्वेषणमन्त्रः—ॐ नमो नारायणाय अमुकस्य अमुकेन सह विद्वेषणं कुरु कुरु स्वाहा ॥

इस मन्त्र में जहाँ अमुक शब्द है वहाँ जिस पर प्रयोग करना हो उसका नाम लेवे, एक लाख जप करने से यह मन्त्र सिद्ध होता है विना मन्त्र सिद्ध किये प्रयोग नहीं करना चाहिये ॥ १६ ॥

इति उड्डीशतन्त्रे रावणशिवसंवादे विद्वेषणप्रयोग-
वर्णनं नाम पञ्चमः पटलः ॥ ५ ॥

अथ षष्ठः पटलः

उच्चाटनम्

ईश्वर उवाच

येन हृतं गृहं क्षेत्रं कलत्रं धनपुत्रकम् ।
उच्चाटनं वधं कुर्यात् शृणु रावण यत्नतः ॥ १ ॥

श्री शिवजी बोले हे रावण ! अब मैं उच्चाटन प्रयोग को कहता हूं तुम सावधान होकर सुनो यह उच्चाटन प्रयोग उस पर करना चाहिये जो घर, जमीन, स्त्री, धन छीन लिया हो दूसरे पर करने से पातक होता है ॥ १ ॥

श्वेतलांगलिकामूलं स्थापयेद् यस्य वेश्मनि ।
निखनेत् तु भवेत्तस्य सद्य उच्चाटनं ध्रुवम् ॥ २ ॥

जिस पर उच्चाटन करना हो उसके घर में कलिहारी की जड़ उच्चाटन मन्त्र से अभिमन्त्रित कर खोदकर गाड़ दे तो उसका उच्चाटन शीघ्र हो जावे ॥ २ ॥

ब्रह्मदण्डी चिताभस्म शिवलिंगे प्रलेपयेत् ।
सिद्धार्थेन च संयुक्तं शनिवारे क्षिपेद् गृहे ॥ ३ ॥
उच्चाटनं भवेत्तस्य जायते मरणान्तिकम् ।
विना मन्त्रेण सिद्धिश्च सिद्धियोग उदाहृतः ॥ ४ ॥

शिवलिङ्ग के ऊपर ब्रह्मदण्डी और चिता का भस्म सफेद सरसों के सहित शनिवार के दिन जिसके घर में उसे फेंक देवे अवश्य उसका उच्चाटन हो जावे इसमें सन्देह नहीं ॥ ३ ॥ ४ ॥

गृहीत्वोदुम्बरं कीलं मन्त्रेण चतुरंगुलम् ।
निखनेद्यस्य शयने तस्योच्चाटनकं भवेत् ॥ ५ ॥

जिस पर उच्चाटन करना हो उसके सूतने के स्थान पर गूलर की चार अंगुल की कील उच्चाटन मन्त्र से अभिमन्त्रित करके गाड़ देवे तो अवश्य उसका उच्चाटन हो जावे ॥ ५ ॥

काकोलूकस्य पक्षस्य यद्गृहे निखनेत् रवौ ।
यन्नाम्ना मन्त्रयोगेन समस्तोच्चाटनं भवेत् ॥ ६ ॥

मंगलवार के दिन मनुष्य की हड्डी को चार अंगुल की कील उच्चाटन मन्त्र से अभिमन्त्रित करके उसको गाड़ देवे तो उसपर जो मूत्र (पेशाव) करे उसकी उच्चाटन हो जावे ॥ ६ ॥

नरास्थिकीलकं भौमे निखनेच्चतुरंगुलम् ।
तत्र मूत्रं स्वयं कुर्यात् तस्योच्चाटनकं ध्रुवम् ॥ ७ ॥

जिस पर उच्चाटन करना हो उसके नाम के सहित कौवा और उल्लू का पंख उच्चाटन मन्त्र से अभिमन्त्रित करके उसके घर में गाड़ देवे तो उसका उच्चाटन हो जावे ॥ ७ ॥

सिद्धार्थं शिवनिर्माल्यं निखनेद्यो गृहेजलम् ।
उच्चाटनं भवेत्तस्य उद्धृते च पुनः सुखी ॥ ८ ॥

शिवजी का चढ़ाया हुआ प्रसाद अथवा जल और सफेद सरसों इनको निम्नलिखित मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिसके घर में खोदकर गाड़ दे उसी का उच्चाटन हो जाय और जब उसको उखाड़ ले तो फिर पहिले के समान सुखी हो जावे ॥ ८ ॥

मन्त्रः—ॐ नमो भगवते रुद्राय करालदंष्ट्राय अमुकं पुत्रबान्धवैः सह हन हन दह दह पच पच शीघ्रं उच्चाटय हुँ फट् स्वाहा ।

इस मन्त्र का दश हजार जप करने से सिद्धिहोती है मन्त्र सिद्ध करके प्रयोग करना चाहिये ॥

मध्याह्ने लुठते भूमौ गर्दभो यत्र धूलिकाम् ।
उदङ्मुखे प्रतीच्यां तु गृहीत्वा वामपाणिना ॥ ९ ॥
यद्गृहे क्षिप्यते धूली तस्योच्चाटनकं भवेत् ।
एवं सप्तदिनं कुर्यात् गृहेशोच्चाटनं भवेत् ॥१०॥

जहाँ दो पहर के समय गदहा लोटा हो वहाँ की धूलि पूर्व अथवा पश्चिम मुख होकर उठा लेवे फिर उसको उच्चाटन मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिसके घर में फेंक देवे उसी का उच्चाटन हो जावे, इस प्रकार सात दिन तक करते रहने से घर के स्वामी को उच्चाटन हो जाता है ॥

ॐ नमोभीमस्यायअमुकंगृहेउच्चाटनंकुरुकुरुस्वाहा ।

इस मन्त्र में जहाँ अमुक शब्द है वहाँ जिस पर प्रयोग करना हो उसका नाम लेना चाहिये, मन्त्र सिद्ध करके तब प्रयोग करे ।

इति उड्डीशतन्त्रे रावणशिवसंवादे उच्चाटनप्रयोग-
वर्णनं नाम षष्ठः पटलः ॥ ६ ॥

अथ सप्तमः पटलः

वशीकरणम्

ईश्वर उवाच

अथाग्रे कथयिष्यामि वशीकरणमुत्तमम् ।
राजाप्रजापशूनां च शृणु रावण यत्नतः ॥ १ ॥

शिवजी बोले हे रावण ! अब मैं राजा प्रजा तथा पशुओं को वश में करने का उत्तम प्रयोग कहता हूँ तुम सावधान होकर सुनो जिस प्रयोग से साधक को संपूर्ण सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं ॥ १ ॥

प्रियङ्गुं तगरं कुष्ठं चन्दनं नागकेशरम् ।
धत्तूरस्य च पंचांगं समभागं तु कारयेत् ॥ २ ॥
छायायां वटिका कार्या प्रदेया खानपानयोः ।
पुरुषो वाथ नारी च यावज्जीवं वशं नयेत् ।
सप्ताहं मन्त्रितं कृत्वा मन्त्रेणानेन मन्त्रवित् ॥३ ॥
एक चित्तास्थितो मन्त्री जपेन्मन्त्रमतन्द्रितः ।
त्रिंशत्सहस्रसंख्याकं सर्वलोकवशंकरम् ॥ ४ ॥

प्रियंगु, तगर, कूट, चन्दन, नागकेसर, धतूर की जड़ डाली, पत्र, फूल, फल को बराबर लेकर पानी में पीसकर उसकी गोली बनाकर छाया में सुखावे और निम्नलिखित वशीकरण मन्त्र से उस गोली को

सात बार अभिमन्त्रित करके जिस स्त्री अथवा पुरुष को खिला दे वह अपने जीवन भर उसके वश में हो जावे ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥

वश्यमन्त्रः—ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय मोहय मोहय मिलि ठः ठः स्वाहा ।

यह मन्त्र एकाग्र चित्त से तीस हजार जप करने से सिद्ध होता है, इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके वश्य का प्रयोग करने से सिद्धि मिलती है ॥ ४ ॥

बिल्वपत्राणि संगृह्य मातुलुंगं तथैव च ।
अजादुग्धेन सम्पेष्य तिलकं लोकवश्यकृत् ॥५॥

बकरी के दूध में बेल की पत्ती और बिजौरा निम्बू पीसकर वशीकरण के मन्त्र से अभिमन्त्रित करके तिलक करने से सब लोग वश में हो जाते हैं ॥ ५ ॥

कुमारीकन्दमादाय विजया बीजसंयुतम् ।
मस्तके तिलकं कुर्यात् वशीकरणमुत्तमम् ॥ ६ ॥

घीकुआर की जड़ और भांग के बीज को एक में मिलाकर मन्त्र से अभिमन्त्रित करके तिलक करे तो उत्तम वशीकरण होता है अर्थात् उसे देखते ही लोग मोहित हो जाते हैं ॥ ६ ॥

गोरोचनं वंशनेत्रं मत्स्यपित्तं च कुंकुमम् ।
चन्दनं काकजङ्घां च मूलं भागसमं नयेत् ॥ ७ ॥
वाप्यादिकजले नैव पेषयित्वा कुमारिकाम् ।
हस्तेन गुटिकां कृत्वा छायायां च विशोषयेत् ॥ ८ ॥
ललाटे तिलकं कुर्यात् यः पश्यति वशी भवेत् ।

राजद्वारे न्याययुद्धे सर्वत्र विजयी भवेत् ॥ ९ ॥

गोरोचन, वंशलोचन, मछली का पित्त, केशर, चन्दन और काकजघा की जड़, इनको बराबर लेकर बावली के जल में कुमारी कन्या के हाथ से पिसवा कर गोली बना लेवे। उस गोली को छाया में सुखा कर उसका तिलक लगाने से जो उसको देखता है वश में हो जाता है। इसका तिलक करने वाला सब जगह विजयी होता है ॥ ७॥ ८ ॥ ९ ॥

अथ राजवशीकरणम्

कुंकुमं चन्दनं चैव रोचनं शशिमिश्रितम् ।
गवां क्षीरेण तिलकं राजवश्यकरं परम् ॥१०॥

गो के दूध में कुंकुम, चन्दन, गोरोचन और भीमसेनी कपूर को मिलाकर मन्त्र से अभिमन्त्रित करके तिलक करे तो राजा को अवश्य ही वश में कर लेवे ॥ १० ॥

मुखस्तंभनम्

चम्पकस्य तु वन्दाकं करे बध्वा प्रयत्नतः ।
संगृह्य तु भरण्यऽर्के पुष्यार्के वा विधानतः ॥११॥
राजानं तत् क्षणादेव मनुष्यो वशमानयेत् ।
करे सौदर्शनं मूलं बध्वा राजप्रियो भवेत् ॥१२॥

भरणी अथवा पुष्य नक्षत्र में विधि पूर्वक चम्पा का वन्दाक लाकर जो हाथ में बाँधता है उसको देखते ही राजा, प्रजा सब वश में हो जाते हैं। अथवा इन्हीं नक्षत्रों में सुदर्शन की जड़ को भी जो मनुष्य हाथ में बाँधता है वह राजा प्रजा को प्रिय हो जाता है ॥ १२ ॥

वशीकरणमन्त्रः--ॐ ह्रीं सः अमुकं मे वशमानय मानय स्वाहा ।

पहिले इस मन्त्र को एक हजार जप करके सिद्ध कर लेवे पीछे सात बार इसी मन्त्र से अभिमन्त्रित करके तिलक करना चाहिये ।

अथवा स्त्रीवशीकरणम्

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि योगानां सारमुत्तमम् ।
यस्य विज्ञान मात्रेण नारी भवति किंकरी ॥१३॥

हे रावण ! सब योगों का तत्व वर्णन करता हूँ जिसको जान लेने से स्त्री दासी हो जाती है ॥ १३ ॥

उशीरं चन्दनं चैव मधुना सह संयुतम् ।
गलहस्तप्रयोगोऽयं सर्वनारीप्रसाधकः ॥१४॥

शहद में खस और चन्दन मिलाकर तिलक करे फिर जिस स्त्री को वश में करना हो उसके गले में हाथ डाले तो वह स्त्री सदा के लिये वश में हो जावे ॥ १४ ॥

चिताभस्म वचा कुष्ठं कुंकुमं रोचनं समम् ।
चूर्णं स्त्रीशिरसि क्षिप्तं वशीकरणमद्भुतम् ॥१५॥

चिता की भस्म, वच, कूट, कुंकुम, तथा गोरोचन को बराबर लेकर चूर्ण बनावे उस चूर्ण को स्त्री के सिर पर छिड़कने से वह स्त्री सदा के लिये वश में हो जाती है ॥ १५ ॥

कृष्णोत्पलं मधुकस्य च पक्षयुग्मं मूलं तथा तगरजं सितकाकजङ्घा । यस्याः शिरोमतमिदं विहितं विचूर्णं दासीभवेज्झटिति सा तरुणी विचित्रम् ॥१६॥

काला कमल भौरों का दोनों पंख, अगर का जड़ और सफेद कौवा के गोड़ी इनको बराबर चूर्ण बनावे यह चूर्ण जिस स्त्री के सिर पर छिड़के वह शीघ्र ही दासी हो जावे ॥ १६ ॥

सव्येन पाणिकमलेन रतावसाने, यो रेतसा निजभवेन विलासिनीनाम्। वामं विलिम्पति पदं सहसैव यस्या, वश्यैव सा भवति नात्र विकल्पभावः ॥१७॥

मैथुन कर लेने के उपरान्त, अपना वीर्य अपने बायें हाथ से लेकर उस स्त्री के बायें चरण के तलवे में मले तो वह स्त्री जन्म भर के लिए दासी हो जाती है ॥ १७ ॥

सिंधूत्थमाक्षिककपोतमलांश्च पिष्ट्वा लिंगं विलिप्य तरुणीं रमते न वोढाम्। सोऽन्यं नयाति पुरुषं मनसाऽपि नूनं, दासी भवेदतिमनोहरदिव्यमूर्तिः ॥१८॥

जो मनुष्य शहद में सेंधा लवण और कबूतर का विष्ठा पीसकर अपने लिंग पर इसका लेप करके जिस स्त्री से मैथुन करता है वह स्त्री उसके वश हो जाती है कभी दूसरे पुरुष के निकट जाने की इच्छा नहीं करती सदा उसी की दासी बनी रहती है ॥ १८ ॥

गोरोचना शिशिरदीधितिशंभुवीर्यैः काश्मीरचन्दनयुतैः कनकद्रवैश्च। लिप्त्वा ध्वजं परिरमत्यबलां नरो यां तस्याः स एव हृदये मुकुटत्वमेति ॥ १९ ॥

जो मनुष्य धतूरे के रस में गोरोचन, और कुरैया, पारा, केसर और चन्दन को पीसकर अपने लिंग पर इसका लेप करके जिस स्त्रीसे मैथुन करता है वह उसके हृदय में मुकुट के समान निवास करता है ॥१९॥

लिंगदृढीकरणम्

लघुसूक्ष्मेन लिंगेन नैव तुष्यन्ति योषितः।
तस्मात्तत्प्रीतये वक्ष्ये स्थूलीकरणमुत्तमम् ॥ २० ॥

छोटे और पतले लिंग से स्त्रियाँ सन्तुष्ट नहीं होती इस कारण उन को सन्तुष्ट करने के लिये लिंगको स्थूल और लम्बा बनाने के उत्तम उपाय को वर्णन करता हूँ सावधान होकर सुनो ।। २० ।।

कुष्ठस्य मातङ्गबलाबलानां, वचाश्वगन्धा गज-पिप्पलीनाम् । तुरङ्ग शत्रोर्नवनोतयोगाल्लेपेन लिङ्गो-मुसलत्वमेति ।। २१ ।।

कूठ, छोटी पीपल, दोनों खरैटी, वच, असगन्ध, गजपीपर तथा कनैल को मक्खन में मिलाकर लिंगपर लेप करने से लिंग मूसल के समान दृढ़ हो जाता है ।। २१ ।।

सलोध्रकाश्मीरतुरंगगन्धा, मातंगगन्धापरि-पाचितेन ।। तैलेन वृद्धि खलु याति लिंगं, वरांगना-लोकमनोहरं तत् ।। २२ ।।

सरसो के तेल में लोध, केसर असगन्ध, पीपल तथा शालपूर्णी को पकाकर लिंग पर मलने से लिंग की वृद्धि होती है जिससे स्त्री का मन मोहित हो जाता है ।। २२ ।।

हयारिपत्नीनवनीतमध्ये, वचाबलाभागरसा-मयैश्च । लेपेन लिंगं सहसैव पुंसां लोहोपमं स्यादि-तिदृष्टमेतत् ।। २३ ।।

भैंसके मक्खन में वच, खरैटी, तथा पारा मिलाकर लिंग पर लेप करने से लिंग शीघ्रही लोहा के समान हो जाता है ।। २३ ।।

भल्लातकास्थिजलशूकमथाब्जपत्रमन्तर्विमर्द्यम-तिमान्सहसैन्धवेन । एतद्विरूढवृहतीफलतोयपिष्ट, मालेपनं तुरगवद्धिमलीकृतेऽङ्गे ।। २४ ।।

भिलावे की गुद्दी, सेवार, और कमल का पत्ता जलाकर कटेली के साथ पानी में इन सबको पीसकर. लिंगपर लेपन करने से मनुष्यका लिंग घोड़ा के लिंगके बराबर लम्बा और कठोर हो जाता है ॥ २४ ॥

वाराहवसया लिंगं मधुना सह लेपयेत् ।
स्थूलं दृढं च दीर्घं च मासाल्लिंगं प्रजायते ॥२५॥

शहद में शूकर की चर्बी मिलाकर एक महीने तक लिंग पर लेप करने से लिंग दृढ़ और दीर्घ हो जाता है ॥ २५ ॥

अश्वगन्धावरी कुष्ठ मांसीं सिंहींफलान्विताम् ।
चतुर्गुणेन दुग्धेन तिलतैलं विपाचयेत् ॥२६॥
स्तनलिंगकर्णपालिवर्धनं भक्षणादितः ।
तद्वच्च मुसली साज्यालेपाल्लिंगस्य दार्ढ्यकृत् ॥२७॥
पिप्पली लवणक्षीरसितालेपोऽपि दीर्घकृत् ।

असगन्ध, सतावर, कूठ, जटामासी और कटेली के फल को चौगुने दूध तथा तिलके तेलमें पकाकर लेप अथवा इसको भोजन करने से स्तन, लिंग, कर्ण आदिकी वृद्धि होती है अर्थात् ये सब भी स्थूल हो जाते हैं। इसी प्रकार मुसली का चूर्ण घी में पकाकर लिंगपर लेप करे तो लिंगको दृढ़ करता है तथा पीपल, सैंधालवण, ओर मिश्री को दूध में मिलाकर लेप करे तो लिंगकी वृद्धि होती है ॥ २६ ॥ २७ ॥

मांसीं वाक्षफलं कुष्ठमश्वगन्धां शतावरीम् ॥२८॥
तैले पक्त्वा प्रलेपेत लिंगस्थौल्यं भवेद्ध्रुवम् ।

जटामासी, बहेड़ा, कूट, असगन्ध और सतावर इनको तेल में पकाकर लेप करे तो अवश्यही लिग स्थूल हो जाता है।

सूतको ह्यश्वगन्धा च रजनी गजपिप्पली ॥२९॥

सिता युक्ता जलैः पिष्ट्वा मासैकं लेपयेत्तदा ।
अद्भुतं वर्द्धयेल्लिंगं योनिकर्णस्तनानि च ॥३०॥

पारा, असगन्ध, हल्दी, गजपीपल, तथा मिश्री को जल में पीसकर एक मासे तक इसका लेप करे तो प्रत्येक अंग की और विशेष करके लिंग की बृद्धि होती है ॥ २९ ॥ ३० ॥

पतिवशीकरणप्रयोगः

रोचनं मत्स्यपित्तं च मयूरस्य शिखां यथा ।
मधुसर्पिः समायुक्तं स्त्रीवरांगविलेपनम् ॥३१॥
निभृते मैथुने भावे पतिर्दासो भविष्यति ।
रूपयौवनसम्पन्ना नान्यामिच्छेत् कदाचन ॥३२॥

घी और शहद में गोरोचन, मछली का पित्त और मोर की शिखा को एक में पीसकर जो स्त्री अपनो योनि के ऊपर इसका लेप करके पति से मैथुन करावे तो उसका पति उसका दास हो जावे कितना भी रूप और यौवन से संपन्न दूसरे स्त्री की इच्छा कभी न करे ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

कुलत्थं बिल्वपत्रं च रोचनं च मनःशिला ।
एतानि समभागानि स्थापयेत्ताम्रभाजने ॥३३॥
सप्तरात्रस्थिते पात्रे तैलमेवं पचेत्ततः ।
तैलैन भगमालिप्य भर्तारमनुगच्छति ।
संप्राप्ते मैथुने भर्ता दासीभवति नान्यथा ॥३४॥

कुलथी, बेलपत्र, गोरोचन और मनःशिला को बराबर लेकर पीस डाले उसे ताँबे के वर्तन में रखकर सात दिन तक कला के रस में पकावे

फिर इसको भग में लगाकर पति से मैथुन कर वे तो निस्सन्देह पति दास हो जावे ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

प्रियंगुं शतपुष्पां च कुंकुमं वंशरोचनम् ।
अश्वमूत्रेण लेपं च पुरुषाणां वशंकरम् ॥३५॥
निम्बकाष्ठस्य धूपेन धूपयित्वा भगं पुनः ।
या नारी रमयेत् कान्तं सा च तं दासतां व्रजेत्॥३६॥

जो स्त्री घोड़े के मूत्र में कांगनी, सौंफ, केसर, और वंशलोचन मिलाकर अपने भग पर इसका लेप करती है और फिर नीम की लकड़ी का धूप देकर पति से मैथुन करती है वह अपने पति को दास बना लेती है ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

एरण्डतैलं शकुलस्य तैलं तथा चबिल्वस्य रसं गृहीत्वा संमर्दयेदूर्ध्वगहस्तकेन तदास्तनं नोपतितौ कदापि ३७

रेंड़ी और मछली का तेल तथा बेलका रस एक में मिलाकर स्तनों पर मलने से स्तन नहीं गिरते अर्थात् कठोर हो जाते हैं। यह सब क्रिया बिना मन्त्र के सिद्ध होने वाली है ॥ ३७ ॥

श्रीपर्णीरसकल्काभ्यां तैलं सिद्धातलोद्भवम् ।
तत्तैलंतिलकेनापिस्तनस्योपरि दापयेत् ।
काठिन्यवृद्धतां यातः पतितौ चोत्थितौ च तौ॥३८॥

तिल के तेल में खंभारी का रस और काले विच्छू को पका कर स्तन पर लेप करने से स्तन कठोर होकर बड़े हो जाते हैं अर्थात् गिरे हुए भी स्तन उठ जाते हैं ॥ ३८ ॥

वृद्धायाः कन्यकायाश्च त्वबालायाः पयोधरौ ।

श्वेतमुस्तसुमं कृष्णाधेनोः पयसि संस्थितम् ।
पिष्ट्वा स्तनयुगे देयं भवेत् पीनपयोधरा ॥३९॥

काली गौ के दूध में सफेद मोथा पीसकर दोनों स्तनों पर इसका लेप करने से वृद्ध स्त्री और कन्या के गिरे हुए स्तन मोटे हो जाते हैं इसमें सन्देह नहीं करना चाहिये ॥ ३९ ॥

वचाश्वगन्धासंयुक्ता चाश्वरीपत्रकं तथा ।
गजपिप्पलिकायुक्तं सद्योऽमलजलेन च ॥४०॥
पेषयित्वा विधानेन लेपयेत्स्तनमण्डले ।
नयने तु कदाचिद्धैचाम्रतालफलं तथा ॥४१॥

यदि स्तन गिर गये हों तो वच, और असगन्ध की जड़ तथा उसी का पत्र और गजपीपल को स्वच्छ जल में पीस कर स्तनों पर लेप करने से वह गिरे हुए स्तन शीघ्रही आम तथा तालफल के बराबर हो जाते हैं ॥ ४० ॥ ४१ ॥

गम्भारिपत्रनीरं च तत् समं तिलतैलकम् ।
समानं जलभागं च दत्वा पाकं समाचरेत् ॥४२॥
तैलशेषं परिज्ञाय वस्त्रेण शोधयेत् कुचौ ।
दिवा प्रलेपनादेव लोहत्वं जायते चिरात् ॥४३॥

गंभारी के पत्तो का रस और उसके बराबर तिल का तेल और दोनों बराबर स्वच्छ जल मिलाकर इसको पकावे जब रस जल जावे केवल तेल शेष रह जावे तब उसको वस्त्र से छान ले फिर इस तेल को केवल एक दिन स्तनों पर लेप करदे तो सदा के लिये वह स्तन लोहे के समान कठोर हो जाते हैं, यह सब प्रयोग स्त्री तथा पुरुष के प्रसन्नार्थ शिवजी ने वर्णन किया है ।

अथ योनिसंस्कारः

प्रक्षालयेन्न निम्बकषायतोयैर्निशाज्यकृष्णागरुगुग्गुलूनाम् । धूपेन योनिं निशि धूपयित्वा नारी प्रमोदं विदधाति भर्तुः ॥ ४४ ॥

नीम के कषैले जल से योनि को धोकर रात्रि में नीम, हल्दी, घी, काला अगर और गुग्गुल का धूप देकर जो स्त्री पतिसे मैथुन कराती है वह पति को प्रसन्न कर लेती है ।

प्रक्षाल्य निंबस्य जले भूयः तस्यैव वल्केन विलेपयेच्च । त्यजेद्युरत्याश्चि रकालभूतं, गन्धम्वराङ्गस्य न संशयोऽत्र । ४५ ॥

नीम के जल से धोकर ऊपर से नीम की छाल को पीस कर लेप करने से बहुत समय तक योनि में दुर्गन्ध नहीं आती इसमें सन्देह नहीं करना चाहिये ॥ ४५ ॥

अथ लोमनाशनम्

पलाशभस्मन्विततालचूर्णै, रम्भाम्बुमिश्रैरुपलिप्य भूयः । कन्दर्पगेहे मृगलोचनानां रोमाणि रोहन्ति कदापि नैव ॥ ४६ ॥

पलाश और हरताल भस्म को केला के जल में मिला कर भग पर लेप करने से वहाँ के रोम ऐसे गिर जाते हैं कि फिर कभी उत्पन्न नहीं होते यह विना मन्त्र के रोम नाशक क्रिया सिद्ध होती है ॥ ४६ ॥

एक प्रदेयो हरितालभागः पञ्च प्रदेयो जलजस्य भागः ॥ सवस्तरोर्भस्मन एव पञ्च प्रोक्तश्चभागः कदली जलार्द्रा ॥ ४७ ॥

केले के जल में एक भाग हरताल का भस्म पाँच भाग शंख का भस्म और पाँच भाग पिलखन मिलाकर भग पर इनका लेप करे तो सुख पूर्वक वहाँ के बाल गिर जाते हैं फिर उत्पन्न नहीं होते हैं ॥ ४७ ॥

तालकं शंखचूर्णं तु मञ्जिष्ठाभस्म किंशुकम् ।
समभागप्रलेपेन रोमखण्डनमुत्तमम् ॥४८॥

हरताल और गन्धक का चूर्ण तथा मजीठा का भस्म और पलास के फूल को बराबर भाग लेकर भग पर लेप करने से सुख सहित रोम नाश हो जाता है यह शिव जी का कहा प्रयोग मिथ्या नहीं है ॥ ४८ ॥

तालकं शंखचूर्णन्तु पिष्ट्वा च क्षारतोयकैः ।
तेनलिप्त्वाकचाघर्मस्थितेगच्छन्तितत्क्षणात् ॥४९॥

हरताल और शंख के चूर्ण को चूने के पानी में पीस कर इसका लेप करके घाम में खड़ा हो जावे तो तुरन्त सब बाल सूख कर गिर जाते हैं यह प्रयोग रोम गिराने में बिना मन्त्र सिद्ध है ॥ ४९ ॥

पूगपत्रोत्थनीरेण पिष्ट्वा गन्धकमुत्तमम् ।
तेन लिप्ता स्थिते घर्मे रोमखंडनमुत्तमम् ॥५०॥

सुपाड़ी के पत्र के रस में उत्तम आमलासार गन्धक पीस कर रोम पर लेप कर घाम में बैठ जाय तो क्षण भर में सब बाल सूख कर गिर जाते हैं ॥ ५० ॥

योनिसंकोचनप्रयोगः

निशाद्वयं पङ्कजकेशरं च, निष्पीड्य देवद्रुम-तुल्यभागम् । अनेन लिप्तं मदनातपत्रं, प्रयाति संकोचफलं युवत्याः ॥ ५१ ॥

दोनों हल्दी, कमल केसर, देवदारु की लकड़ी को बराबर भाग

लेकर पीस डाले उसको भगपर लेप करने से स्त्रियों की योनि संकुचित तथा निर्मल हो जाती है ॥ ५१ ॥

संघातकीपुष्पफलत्रिकेन, शम्बत्वचा सारसं घृतेन । लिप्त्वा वराङ्गं मधुकेन तुल्यं, वृद्धापि कन्येव भवेत् पुरन्ध्री ॥ ५२ ॥

धाय का फूल, त्रिफला, जामुन की छाल, गुद्दी, और उसी का रस, घी तथा मुलहठी को बराबर भाग लेकर पीस डाले फिर एक में मिलाकर भग पर लेप करने से वृद्धा स्त्री का भग भी कन्या के भग के समान हो जाती है ॥ ५२ ॥

इन्दीवरव्याघ्रिवचोषणानां पुरङ्गमारासनयामिनीनाम् । लेपश्च नार्याः स्मररन्ध्रसंस्थो, संकोचयत्याशु हठेन रन्ध्रम् ॥ ५३ ॥

नीलकमल का बीज, कटेली, बच, काली मिर्च, कनैल का बीज, और छाल, असन और हल्दी, इनको बराबर लेकर पीस डाले इसका लेप भगपर करने से योनि तुरंत संकुचित हो जाती है ॥ ५३ ॥

या शक्रगोपं स्वयमेव पिष्ट्वा, विलिम्पति स्त्री च वरांगदेशम् । आहत्य देशं कठिनं च गाढं भवेन्न चात्रास्ति विचार्य कार्या ॥ ५४ ॥

जो स्त्री बीरबहूटी को पीसकर अपने भग पर लेप करती है उसका भग निःसन्देह कठोर और गहिरा हो जाता है ॥ ५४ ॥

नारीद्रावणम्

यद्यप्यष्टगुणाधिको निगदितः कामांगनानां सदा नो याति द्रवतां तथापि झटिति स्त्री कामिनां संगमे ।

तस्माद् भेषजसंप्रयोगविधिना संक्षेपतो द्रावणं
केचित्पल्लवयामिनीरजदशां प्रीत्या परं कामिनाम् ।

पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में आठ गुना काम अधिक होता है इसका कारण यह है कि पुरुषों के समागम से स्त्रियाँ शीघ्र स्खलित नहीं होती हैं इसलिये स्त्री पुरुष की परस्पर के वास्ते स्त्रियों के स्खलित करनेवाली औषधी का संक्षेप में वर्णन करता हूं जिसके प्रयोग से स्त्रियाँ सदा सन्तुष्ट रहती हैं ।। ५५ ।।

सिन्दूरचिञ्चा फलमाक्षिकानि, तुल्यानियस्या-
मदनातपत्रे । प्रलिप्य तस्यः पुरुषप्रसंगात्, प्रागेव
वीर्यच्युतिमातनोति ।। ५६ ।।

जिस स्त्री के भग में सिन्दूर और इमली का फल शहद में मिलाकर पुरुष लेप करके उससे मैथुन करता है तो स्त्री का वीर्यपात शीघ्रही हो जाता है ।। ५६ ।।

व्योषं रजः क्षौद्रसमन्वितं वा, क्षिप्तं यदि स्यात्
स्मरयन्त्रगेहे । द्रुतं भवेत् सा सहसैव नारी, दृष्टः
सदाऽयं किल योगराजः ।। ५७ ।।

शहद में त्रिफले का चूर्ण मिलाकर यदि स्त्री के भग में डालकर उससे मैथुन करे तो वह शीघ्रही स्खलित हो जाती है ।। ५७ ।।

पिप्पली चन्दनं चैव बृहती पक्वतिन्तिडी ।
एषां लिगे प्रलेपेन द्रवेन्नारी न संशयः ।।५८।।

पीपल, चन्दन, कटेली और पक्की इमली का लेप बनाकर लिंग-पर लेप करे फिर स्त्री से मैथुन करे तो स्त्री शीघ्र ही स्खलित हो जाती है ।। ५८ ।।

अगस्त्यपत्रद्रवसंयुतेन मध्वाज्यसंमिश्रितटंकणेन । लिप्त्वा ध्वजं यो रमतेऽङ्गनानां, स शुक्रमाकर्षति शीघ्रमेव ॥ ५६ ॥

जो पुरुष अगस्त्य के पत्ते के रस में घी, शहद और सुहागा मिलाकर अपने लिंग के ऊपर लेप करके स्त्री से मैथुन करता है वह स्त्री के वीर्य को आकर्षित कर लेता है ॥ ५६ ॥

सुलोध्रधत्तूरसपिप्पलीनां, क्षुद्रोषणक्षौद्रविमिश्रितानाम् । लेपेन लिङ्गस्य करोति रेतःच्युतिं विपक्षप्रमदाजनस्य ॥ ६० ॥

लोध, धतूरा, पीपल, कटेली, और पिपरामूल, इनके चूर्ण को शहद में मिलाकर इसका लेप जो अपने लिंग पर लगा कर स्त्री से संभोग करता है वह उसके वीर्य को खींच लेती है ॥ ६० ॥

तुरगसलिलमध्ये भावितं चेत्रमाषं मरिच मधुकतुल्यां पिप्पलींपेषयित्वा । परिरमतिविलिप्य स्वीयलिंगं नरोयः, प्रभवतिवनितानांकाककल्लोलमानः ॥६१॥

जो मनुष्य असगन्ध के जल में उरदी, तथा मुलहठी के बराबर भाग को पीसकर अपने लिंग पर लेप करके स्त्री से मैथुन करता है वह उस स्त्री को स्खलित कर देता है ॥ ६१ ॥

बिल्वपुष्पं सकर्पूरं मुण्डीपुष्पं चपेषितम् ।
लिंगलेपेन रामाणांद्रावोभवति संगमे ॥६२॥

बेल और मुण्डी का पुष्प तथा कपूर को एक में पीसकर लिंग पर लेप कर के स्त्री से मैथुन करता है उससे स्त्री स्खलित हो जाती है इसमें सन्देह नहीं करना चाहिये ॥ ६२ ॥

बृहतीफलमूलानि पिप्पली मरिचानि च।
मधुरोचनया सार्द्धं लिंगलेपं द्रवान्विताः ॥६३॥

शहद में कटेली का फल, और उसी का जड़, पीपल, कालीमिर्च तथा गोरोचन का बराबर भाग पीसकर मिला लेवे लिंग पर इसका लेप करके जो पुरुष स्त्री से मैथुन करता है वह स्त्री को स्खलित कर देता है ॥ ६३ ॥

मरिचकनकबीजैः पिप्पलीलोध्रचूर्णैर्विमलमधुविमिश्रैर्मानवो लिप्तलिङ्गः। स्मरति रतिविलासे कष्टसाध्यां च नारीं, समुचितरतिरागां संविदध्यादवश्यम्॥

मिर्च, धतूरे की बीज, पीपर, और लोध का चूर्ण लेकर शहद के साथ लिंग पर लेप करके मैथुन करने से जो स्त्री अधिक परिश्रम से भी स्खलित नहीं होती वह बिना परिश्रम स्खलित हो जाती है ॥६४॥

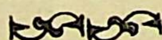
सर्वेषां द्रवयोगानां मन्त्रराजं मयोदितम्।
जपेदष्टोत्तरशतं तत्र योगस्य सिद्धये ॥६५॥

इन सब द्रावण के उपायों पर मेरा कहा एक मन्त्र है उसको एक सौ ८ बार जप करने से शीघ्रही वे सब क्रियायें सिद्ध हो जाती हैं ॥ ६५ ॥

मन्त्रः—ॐ नमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय स्त्रीणां मदं द्रावय द्रावय ठः ठः स्वाहा ॥

द्रावण प्रयोग पर इस मन्त्र को एक सौ आठ बार जप करना चाहिये।

इति उड्डीशतन्त्रे रावणशिवसंवादे वशीकरण
प्रयोगकथनं नाम सप्तमः पटलः ॥ ७ ॥



अथाष्टमः पटलः

आकर्षणप्रयोगः

ईश्वर उवाच

अथाग्रे कथयिष्यामि आकर्षणविधिं वरम् ।
यस्य विज्ञानमात्रेण सत्यमाकर्षणं भवेत् ॥ १ ॥
मानुषासुरदेवाश्च सयक्षोरगराक्षसाः ।
स्थावराः जङ्गमाश्चैव आकृष्टास्ते न संशयः ॥२॥

श्रीशिवजी बोले कि हे रावण ! अब मैं आकर्षण प्रयोग की उत्तम विधिको कहता हूँ सावधान होकर सुनो जिसको जानने में मनुष्य, राक्षस देवता, पशु, पक्षी, आदि सभी का निःसंदेह आकर्षण हो जाता है, यह प्रयोग भी विना मन्त्रके सिद्ध होने वाला है इसमें सन्देह नहीं करना चाहिये ॥ १ ॥ २ ॥

गृहीत्वार्जुनवन्दाकमाश्लेषायां समाहितः ।
अजामूत्रेण सम्पिष्ट्वा निक्षिपेच्छिरसोपरि ॥ ३ ॥
नारी वा पुरुषो यस्य सुतो वा पशुरेव च ।
आकृष्टः स्वयमायाति सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ ४ ॥

अश्लेषा नक्षत्र में देवदारु वृक्ष का बांदा लाकर बकरे के मूत्र में पीस डाले फिर जिस स्त्री अथवा पुरुष तथा पशु आदि जिसके सिर पर उसको डाले वह आर्कषित होकर स्वयं चला आवे ॥ ३४ ॥

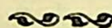
सूर्यावर्तस्य मूलं तु पञ्चम्यामानयेत् बुधः ।
ताम्बूलेन समं दद्यात् स्वयमायाति भक्षणात् ॥५॥

पञ्चमी के दिन हुरहुर की जड़ लेकर उसको पान में रखकर जिसको खिला दे वह स्वयं आर्कषित होकर चला आवे ॥ ५ ॥

साध्यवामपदस्थां तां मृत्तिकामाहरेत्ततः ।
कृकलासस्य रक्तेन प्रतिमां कारयेत्ततः ।। ६ ।।
साध्यनामाक्षरं तस्यास्तद्रक्तैर्विलिखेत् हृदि ।
मूत्रस्थाने च निखनेत् सदा तत्रैव मूत्रयेत् ।
आकर्षयेत्तु तां नारीं शतयोजनसंस्थिताम् ।। ७ ।।

जिस स्त्री को आकर्षण करना हो उसके बायें पैर के नीचे की मिट्टी लेकर गिरगिट के रक्त से उसकी मूर्ति बनावे फिर उस पुतली के हृदय में गिरगिट के रक्त से उसका नाम लिखे और मूत्र करने के स्थान में उसको गाड़ कर सदा उस पर मूत्र किया करे तो सौ योजन तक की रहनेवाली स्त्री आकर्षित होकर चली आवे यह सब प्रयोग बिना मन्त्र के सिद्ध है ।। ६ ।। ७ ।।

इति उड्डीशतन्त्रे रावणशिवसंवादे आकर्षणप्रयोगकथनं
नाम अष्टमः पटलः ।। ८ ।।



अथ नवमः पटलः

यक्षिणी साधनम्

ईश्वर उवाच

अथाग्रे कथयिष्यामि यक्षिण्यादिप्रसाधनम् ।
यस्य सिद्धौ नराणांहि सर्वे सन्ति मनोरथाः ।। १ ।।

श्री शिवजी कहते हैं कि अब मैं यक्षिणी साधन के प्रयोग को कहता हूँ सावधान होकर सुनो, जिसके सिद्ध होने से मनुष्य की सब कामना सिद्ध हो जाती है ।। १ ।।

सर्वासां यक्षिणीनां तु ध्यानं कुर्यात् समाहितः ।

भगिनी-मातृ-पुत्री-स्त्री-रूपन्तुल्यं यथेप्सितम् ॥ २ ॥

यक्षिणियों की माता, वहिन, कन्या, तथा स्त्री जिस स्वरूप में उसको सिद्ध करना हो उसी स्वरूप में सावधान होकर ध्यान रखना चाहिये ॥ २ ॥

भोज्यं निरामिषं चान्नं वर्ज्यं ताम्बूलभक्षणम् ।
उपविश्य जपादौ च प्रातः स्नात्वा न कं स्पृशेत् ॥३॥
नित्यकृत्यं च कृत्वा तु स्थाने निर्जनिके जपेत् ।
यावत् प्रत्यक्षतां यान्ति यक्षिण्यो वाञ्छितप्रदाः ॥४॥

जब तक साधन करता रहे तब तक मांस और पान न खाना चाहिये, मृगछाला पर बैठना चाहिये, प्रातः काल में स्नान करने के उपरान्त किसी को स्पर्श नहीं करना चाहिये। अपनी नित्यक्रिया को समाप्त करके एकान्त स्थानमें तब तक जप करता रहे जब तक वांछित फलको देने वाला यक्षिणी प्रत्यक्ष रूपमें प्रकट न होवे ॥ ३–४ ॥

इति महायक्षिणीसाधनम् ।

साधनमन्त्रः--ॐ क्लीं ह्रीं ऐं ॐ श्रीं महायक्षिण्यै सर्वैश्वर्यप्रदात्र्यै नमः ॥

इतिमन्त्रस्य च जपं सहस्रस्य च सम्मितम् ।
कुर्यात् बिल्वसमारूढो मासमात्रमतन्द्रितः ॥ ५ ॥
दत्वामिषबलिं तत्र कल्पयेत् संस्कृतं पुरः ।
नानारूपधरा यक्षी क्वचित् तत्रागमिष्यति ॥ ६ ॥
तां दृष्ट्वा न भयं कुर्याज्जपेत् संसक्तमानसः ।
यस्मिन् दिने बलिं भुक्त्वा वरं दातुं समर्थयेत् ॥ ७ ॥

तदा वरान्वै वृणुयात्तांस्तान्वै मनसेप्सितान् ।
धनमानयितुं ब्रूयादथवा कर्णकानिकीम् ॥ ८ ॥
भोगार्थमथवा ब्रूयान्नृत्यं कर्तुमथापि वा ।
भूतानानयितुं वापि स्त्रियमानयितुं तथा ॥ ९ ॥
राजानं वा वशीकर्तुमायुर्विद्यायशो बलम् ।
एतदन्यद्यदीप्सेत साधकस्तत्तु याचयेत् ॥ १० ॥
चेत्प्रसन्ना यक्षिणी स्यात् सर्वं दद्यान्न संशयः ।
अशक्तस्तु द्विजैः कुर्यात् प्रयोगं सुरपूजितम् ॥११॥
सहायानथवा गृह्य ब्राह्मणान्साधयेद् व्रतम् ।
तिस्रः कुमारिकाभोज्याः परमान्नेन नित्यशः ॥१२॥
सिद्धे धनादिके चैव सदा सत्कर्म आचरेत् ।
कुकर्मणि व्ययश्चेत्स्यात् सिद्धिर्गच्छतिनान्यथा ॥१३

इस मन्त्र को वेलवृक्ष के ऊपर बैठ कर जितेन्द्रिय हो एक मास तक प्रति दिन एक हजार मन्त्र का जप करे और यक्षिणी को बलिदान देने के लिये पहिले से वहाँ मदिरा और मांस आदि की सामग्री को तैयार रक्खे क्योंकि अनेक रूपको धारण करने वाली यक्षिणी न जाने कब वहाँ आ जावे । जब वह आवे तब उसको देख कर भय न माने सावधान होकर ,जप करता ही रहे । जिस दिन महा यक्षिणी बलिदान लेकर वर देने को कहे तब उससे इच्छा पूर्वक वरदान माँग ले । धन लाने को कहे, कान में बात बताने को कहे, नाचने को कहे, स्त्रियों को लाने के लिये कहे, वस्त्र लाने को कहे, राजा को वश करने को कहे, तथा आयु, विद्या, यश, बल जिस बात की इच्छा हो सो वरदान माँग

ले। जब यक्षिणी प्रसन्न होती है तब साधक को निस्सन्देह सब कुछ देती है, यदि अपने इस प्रयोग को सिद्ध न कर सके तो ब्राह्मण से करावे और अपने उनको सहायता करे। जब तक अनुष्ठान करता अथवा करवाता रहे तब तक प्रतिदिन तीन हजार कुमारियों को उत्तम अन्न भोजन करावे। जब सिद्धि प्राप्त हो जावे तब उस धन से सदा शुभ कर्म करे क्योंकि अशुभ कर्म में धन खर्च करने से सिद्धि नष्ट हो जाती है ॥ ५–१३ ॥

धनदायक्षिणी मन्त्रः-ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धनं मम-देहि देहि स्वाहा।

अश्वत्थवृक्षमारुह्य जपेदेकाग्रमानसः।
धनदायाः प्रसादेन धनं प्राप्नोति मानवः ॥ १४ ॥

पीपल के वृक्ष पर बैठ कर एकाग्रचित्त से जप करने से धनदा नाम यक्षिणी प्रसन्न होकर मनुष्य को धन देती है। सब यक्षिणियों को सिद्ध करने की एकही विधि है केवल उनके मन्त्रों में भेद है ॥१४॥

ॐ ह्रीं ह्रीं हूं रं कुरु कुरु स्वाहा।

चूतवृक्षं समारुह्य जपेदेकाग्रमानसः।
अपुत्रो लभते पुत्रं नान्यथा मम भाषितम् ॥ १५ ॥

आम के वृक्ष के नीचे बैठ कर जप करने से यक्षिणी प्रसन्न होकर जिसको पुत्र नहीं होता उसके लिये पुत्र होने का वरदान देती है उससे मनुष्य को पुत्र प्राप्त होता है ॥

ॐ ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः।

वटवृक्षे समारूढो जपेदेकाग्रमानसः।
महालक्ष्मीमनु गेहे स्थिरालक्ष्मीश्च जायते ॥ १६ ॥

वट वृक्ष के ऊपर एकाग्रचित्त से उपरोक्त महालक्ष्मी के मन्त्र का दश हजार प्रतिदिन जप करने से महालक्ष्मी प्रसन्न होकर गृह में स्थायी हो जाती हैं ॥ १ ॥

ॐ ऐं जयायक्षिण्यै सर्वकार्यसाधनं कुरु कुरु स्वाहा ।

अर्कमूलं समारूढो जपेदेकाग्रमानसः ।
यक्षिणी च जयानाम्नी सर्वकार्यकरी मता ॥१७॥

मन्दार के वृक्ष के नीचे बैठकर एकाग्रचित्त से उपरोक्त जया यक्षिणी के मन्त्र का दस हजार जप प्रतिदिन करे वह यक्षिणी प्रसन्न होकर मनुष्य के सब कार्यों को सिद्ध करती है ॥ १७ ॥

गुप्तेन विधिना कार्यं प्रकाशं नैव कारयेत् ।
प्रकाशं बहुविघ्नानि जायते नात्र संशयः ॥ १८ ॥
प्रयोगश्चानुभूतोऽयं तस्माद्यत्नं समाचरेत् ।
निर्विघ्नेन विधानेन भवेत् सिद्धिरनुत्तमा ॥ १९ ॥

इस यक्षिणी साधन के प्रयोग को गुप्त रूप से करना चाहिये। प्रकट में करने से अनेक प्रकार के विघ्न होने लगते हैं निर्विघ्न और विधि पूर्वक प्रयोग करने से उत्तम सिद्धि प्राप्त होती है ॥१८॥१९॥

भूतिनीसाधनम्

सा भूतिनी कुण्डलधारिणी च सिन्दूरिणी चाप्यथ हारिणी च । नटी तथा चातिनटी च चेटि कामेश्वरी चापि कुमारिका च ॥ २० ॥

यह भूतिनी अनेक रूप को धारण करके अपने साधक की इच्छा को पूर्ण करती है नटी, अतिनटी चेटिका, कुण्डल धारिणी इत्यादि अनेक रूप से साधक के समीप आती है ॥ २० ॥

भूतिनीमन्त्रः-ॐ ह्राँ क्रूँ क्रूँ क्रूँ कटु कटु अमुकीदेवी वरदा सिद्धिदा च भव अंभः ॥

चम्पावृक्षतले रात्रौ जपेदष्टसहस्रकम् ।
पूजनं विधिना कृत्वा दद्यात् गुग्गुलुधूपकम् ॥२१॥
सप्तमेऽह्नि निशीथे च सा चागच्छति भूतिनी ।
दद्याद् गन्धोदकेनार्घ्यं तुष्टामातादिकाभवेत् ॥२२॥

रात्रि के समय चम्पा वृक्ष के नीचे विधिपूर्वक भूतिनी का पूजन करके यहाँ गुग्गुल का धूप देवे और उपरोक्त मन्त्र का आठ हजार प्रति दिन जप करे। जप करने के समय अमुकी के अस्थान में भूतिनी आदि यक्षिणियों में जिसको सिद्ध करने की इच्छा हो उसी का नाम लेना चाहिये। इस प्रकार साधन करने से सातवीं रात्रि को भूतिनी आती है उसके आने पर जल चन्दन से अर्घ्य देना चाहिये फिर वह सन्तुष्ट होकर साधक की इच्छा नुसार माता आदि के रूप में उसके सम्मुख प्रकट होती है ॥ २१ ॥ २२ ॥

मातेत्यष्टादशानां च वस्त्रालंकारभोजनम् ।
भगिनीचेत्तदानारीं दूरादाकृष्य सुन्दरीम् ॥ २३ ॥
रसं रसांजनं दिव्यं विधानं च प्रयच्छति ।
भार्याचपृष्ठमारोप्य स्वर्गं नयति कामिता ।
भोजनं कामिकं नित्यं साधकाय प्रयच्छति ॥२४॥

माता के रूप में सिद्ध होकर १८ मनुष्यों को भोजन वस्त्र आभूषण प्रतिदिन देती है। बहिन के रूप में सिद्ध होकर सुन्दर स्त्री तथा अनेक प्रकार की दिव्य वस्तु और रसायन भोजन यह सब लाकर साधक को

देती है, भार्या रूप में प्रसन्न होकर साधक को अपनी पीठ पर बैठाकर स्वर्ग में ले जाती है और भोजन आदि पदार्थों को देकर प्रतिदिन उसको प्रसन्न रखती है ॥ २३ ॥ २४ ॥

रात्रौ देवालयं गत्वा शुभ्रां शय्यां प्रकल्पयेत् ।
जातीपुष्पेण वस्त्रेण चन्दनेन च पूजयेत् ॥२५॥
धूपं च गुग्गुलुं दत्वा जपेदष्टसहस्रकम् ।
जपान्ते शीघ्रमायाति चुम्बत्यालिंगयत्यपि ॥२६॥
सर्वालंकारसंयुक्ता संभोगादिसमन्विता ।
कुबेरस्य गृहादेव द्रव्यमाकृष्य यच्छति ॥ २७ ॥

रात्रि के समय देवालय में जाकर सुन्दर शय्या तैयार करे और चमेली के फूल वस्त्र चन्दन से पूजा करके गुग्गुल का धूप देवे और मन्त्र को आठ हजार जप करे। जप समाप्त होने पर देवी आती है और साधक को आलिंगन और चुम्बन करती है। फिर संपूर्ण अलंकार को धारण करके साधक से भोग करती है और प्रातः काल में प्रतिदिन कुबेर के गृह से धन लाकर दे जाती है।

अथ शवश्मशानसाधनम्

ईश्वर उवाच

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि शवसाधनमुत्तमम् ।
श्मशानसाधनं चापि तदाश्चर्यकरं परम् ।
यस्य विज्ञानमात्रेण सिद्धो भवति साधकः ॥ २८ ॥

श्री शिवजी कहते हैं कि अब मैं श्मशान साधन की उत्तम विधि को कहता हूँ जिसको जानकर साधन करने वाला सिद्ध हो जाता है इस प्रयोग से मनुष्य के अनेक कार्य सिद्ध हो जाते हैं ॥ २८ ॥

श्मशानालयमागत्य उपवासो जितेन्द्रियः ।
अमायां भौमवारे च शवोपरि समारुहेत् ॥ २६ ॥
अयुतं जपेन्मंत्रं मौनी निर्भयरूपतः ।
शवसाधनमेतत्तु सिद्धयत्यत्र न संशयः ॥ ३० ॥
यद्यदाज्ञापयति तत्तत् कुरुते सुविनिश्चितम् ।
जपान्ते पूजनं कार्यं श्मशाने निर्जने तथा ।
षोडशैरुपचारैस्तु श्यामां श्यामलसुन्दरीम् ॥३१॥
ॐ ह्रीं ॐ शवमेनं साधय साधय स्वाहा ।

जिस मंगलवार के दिन अमावस्या हो उस दिन साधन करने वाला साधक श्मशान में आकर उपवास पूर्वक रहे जितेन्द्रिय पुरुष श्मशान में मुर्दे के ऊपर निर्भय होकर बैठ जावे और दश हजार मन्त्र का जप करे जप समाप्त होने पर एकान्त स्थान में सोलहो उपचार से श्यामा और श्यामल सुन्दरी का पूजन करे शव साधन की यही क्रिया है इसको साधन करके साधक जो आज्ञा देता है उसको वे अवश्य करती हैं ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥

काकजंघा सिताग्राह्या गृध्रस्य च वसा तथा ।
अश्वगन्धा समायुक्ता ह्युष्ट्रक्षीरेण पेषयेत् ।
अनेन लिप्तपादे तु योजनानां तिथिं व्रजेत् ॥३२॥

ऊटिन के दूध में सफेद काकजंघा, गिद्ध की चर्बी और असगन्ध मिलाकर पैर के तलवे में उसका लेप करने से मनुष्य एक दिन में पन्द्रह योजन तक चल सकता है ॥ ३२ ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय भूतबेतालत्रासनाय

शंखचक्रगदाधराय हन हन महते चन्द्रामृताय हूं फट् स्वाहा ॥

इस मन्त्र का एक लाख जप करने से पादुका सिद्ध होता है, इसी मन्त्र को सौ वार पढ़कर अभिमन्त्रित करके लेप करनां चाहिये ।३२।

ॐ नमो भगवते रुद्राय मासे संमले काले खले घोर प्रवर सर सर स्वाहा ॥

श्वानं मार्जारनकुलं पित्तं ग्राह्यं समं समम् ।
योजनानां तिथिर्गत्वा काकमासं रसाञ्जनम् ।
पिष्ट्वा पादप्रलेपेन पुनरावर्तते तथा ॥ ३३ ॥

कुत्ता, बिल्ली, और नेवले का पित्त इसका समान भाग लेकर उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके लेप करे तो एक दिन में पन्द्रह योजन तक जा सकता है । फिर कौए का मांस और रसरंजन मिलाकर पहिले की तरह अभिमन्त्रित करके लेप कर लेने से उतनी ही दूर उसी पैर से लौट भी सकता है ॥ ३३ ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय हरितगदेश्वराय त्रासय त्रासय चालय चालय स्वाहा ॥

काकस्य हृदयं नेत्रं जिह्वां चैव मनःशिलाम् ।
सिन्दूरं गैरिकं चैव अजमारीं च मालतीम् ॥३३॥
समां रुद्रजटां चैव विदार्या सह पेषयेत् ।
तल्लिप्तपादः सहसा योजनानां शतं व्रजेत् ।
वलीपलितनिर्मुक्तो दयया भूतसंप्लवम् ॥३४॥

कौआ का हृदय, नेत्र, जिह्वा, मैनशिल, सिन्दूर, गुरुच, अजवाइन मालती और विलारीकन्द को समान भाग लेकर इसका लेप पैर में लगाने से मनुष्य एकसौ योजन तक जा सकता है। इस लेपको भी उपरोक्त मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करे ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

संजीवनीप्रयोगः

मृतसंजीवनीं विद्यां कथयिष्यामि प्रेमतः ।
लिंगमंकोलवृक्षाधःस्थापयित्वा प्रपूजयेत् ॥ ३५ ॥
नवं घटं च तत्रैव पूजयेल्लिंगसन्निधौ ।
वृक्षं लिंगं घटं चैव सूत्रेणैकेन वेष्टयेत् ॥ ३६ ॥

श्री शिवजी बोले कि अब मैं प्रेम सहित मृत संजीवनी विद्याको कहता हूँ। सावधान होकर सुनो। अङ्कोल वृक्षके नीचे शिवलिंग की स्थापना करे उसीके समीप एक नया घट स्थापित करके वृक्ष, लिंग और घटकी विधिवत् पूजा करे पूजन करते समय तक उपवास करे सिद्धि तक जितेन्द्रिय रहे ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

चतुर्भिः साधकैर्नित्यं प्रणिपत्य क्रमेण तु ।
एवं च द्विदिनं कुर्यादघोरेणसमर्चयेत् ॥३७॥
पुष्पादिफलपाकान्तं साधनं कारयेत् बुधः ।
फलानिपक्वान्यादाय पूर्वोक्तं पूरयेद्घटम् ॥३८॥

और प्रतिदिन चार साधकों के सहित एक एक कर प्रणाम करे, इसी प्रकार अघोरमन्त्र से प्रतिदिन पूजन और जप करे जबतक उस वृक्षमें फूल फल न लगे और एक एक साधक को दो दो दिन उस लिंग की पूजा करते रहना चाहिये। जब उस वृक्ष का फल पक जावे तब उस फलको पहिले से रखे हुये घड़े में धर देवे ॥३७॥३८॥

तद्घटं पूजयेन्नित्यं गन्धपुष्पाक्षतादिभिः ।

तुषवर्जन्ततः कुर्याद्बीजानां घर्षयेन्मुखम् ।।३९।।
तन्मुखे ब्रह्मणां वृत्तं किञ्चित् प्रलेपयेत् ।
विस्तीर्णमुखभागान्तः कुम्भकारकरोद्भवम् ।।४०।।

और प्रतिदिन गंध पुष्प अक्षत आदि उपचारों से उस घटकी पूजा करता रहे, फिर उस घट में से उन बीजों को निकाल कर उनकी भूँसी अलग करके दूसरा बड़े मुंहका घट लावे उस घड़े के मुख के भीतर कुछ दूर तक सुहागा का लेप कर देवे ।।३९।।४०।।

मृत्तिकां लेपयेत्तत्र तानि बीजानि रोपयेत् ।
कुण्डल्याकारयोगेन यत्नाद् ऊर्ध्वमुखानि वै ।।४१।।
शुष्कं ताम्रपात्रोर्द्ध्वं भाण्डंदेयमधोमुखम् ।
आतपे धारयेत्तैलं ग्राहयेक्तं च रक्षयेत् ।।४२।।
मासार्द्धं चैव तत्तैलं मासार्द्धं तिलतैलकम् ।
नस्यं देयं मृतस्यैव कालदष्टस्य तत्क्षणात् ।।४३।।

फिर उस घड़े में मिट्टी रखकर उसमें उन बीजों को गाड़ देवे, जब वे बीज सूख जावें तब उस घड़े के ऊपर एक ताँबे का बर्तन रखकर उस घड़े को उलटा कर दे उसके ऊपर आँच देकर उस बीज का तेल निकाले, फिर आधा मासा यह तैल और आधा मासा तिल का तैल एक में मिलाकर रख लेवे जिसकी मृत्यु सर्प काटने से हो उसको उस तेल का नास देवे तो वह तुरन्त जीवित हो जाता है यह प्रयोग मिथ्या नहीं है इसमें सन्देह नहीं करना चाहिये ।

अघोरमन्त्रः---अघोरेभ्योऽथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः । सर्वेभ्यो सर्वसर्वेभ्यः नमस्ते अस्तुरुद्ररूपेभ्यः ।।

यह अघोर मन्त्र है इसी मन्त्र से घट की पूजा कर प्रतिदिन प्रणाम करे तो संजीवनी सिद्धि हो जाता है ॥

विद्याधरसिद्धिः

मायाबीजं तथा गौगोपतये तदन्तरम् ।
एतन्मन्त्रं शुचिर्भूत्वा निशीथे तु जपेत्सुधीः ॥४४॥
त्रिसहस्रं जपेन्नित्यं ततः सिद्धिर्भवेत् ध्रुवम् ।
गन्धर्वशब्दविद्भूत्वा बलवान पुत्रवान् भवेत् ॥४५॥

ॐ ह्रीं गौगोपतये नमः ॥

इस मन्त्र को आधी रात के समय प्रति दिन तीन हजार जप करने से मन्त्र अवश्य सिद्ध होता हैं। विद्याधर मन्त्र सिद्ध हो जाने से मनुष्य गंधर्व का शब्द जानने लगता है और बलवान् तथा पुत्रवान् हो जाता है ॥ ४५ ॥

इति उड्डीशतन्त्रे रावणशिवसंवादे विद्याधर-सिद्धिकथनं
नाम नवमः पटलः ॥ ९ ॥



अथ दशमः पटलः

ईश्वर उवाच

इन्द्रजालं प्रवक्ष्यामि शृणु सिद्धिं प्रयत्नतः ।
येन विज्ञानमात्रेण ज्ञायते सर्वकौतुकम् ॥ १ ॥

श्री शिवजी बोले कि अब मैं इन्द्रजाल के कौतुक को सिद्ध करने का उपाय कहता हूँ, सावधान होकर सुनो। जिसको जान लेने से मनुष्य को सब प्रकार के कौतुकों का ज्ञान हो जाता है ॥ १ ॥

भूतकरणम्

आदौ भूतकरं वक्ष्ये तच्छृणुष्व समासतः ।
भल्लातकरसे गुञ्जां विषं चित्रकमेव च ॥ २ ॥
कपिकच्छुकरोमाणि चूर्णं कृत्वा प्रयत्नतः ।
एतच्चूर्णप्रदानेन भूतीकरणमुत्तमम् ॥ ३ ॥

भिलावे के रस में घुंघुची, विष, चीता और केवाच का चूर्ण मिला-कर जिसको दे देने उसी को भूत लग जावे ॥२॥३॥

तस्य रूपं प्रवक्ष्यामि ज्ञायते यैस्तु लक्षणैः ।
अङ्गानि बिंधिमायान्ति मूर्च्छन्ति च मुहुर्मुहुः ।
एतु रूपं भवेद्यस्य तत् भूतावेशलक्षणम् ॥ ४ ॥

जिन लक्षणों से भूतावेश जाना जाता है वह लक्षण कहता हूँ, शरीर धीरे धीरे हिले बार बार मूर्छा आवे उसको भूतावेश जानना चाहिये ॥ ४ ॥

चिकित्सा तस्य वक्ष्यामि येन सम्पद्यते सुखम् ।
उशीरं चंदनं कुष्ठं लेपो भूतविनाशकः ॥ ५ ॥

जिसको भूत लगा हो उसकी औषधि को कहता हूँ । खस, चन्दन, कांगनी, तगर, लालचन्दन, और कूट एक में मिला कर लेप करने से भूतावेश नाश हो जाता है ॥ ५ ॥

मन्त्रः--ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय कुहुनी कुर्बली स्वाहा ॥

इस मन्त्र से जिसको भूत लगा हो उसको एक सौ बार झाड़ देने से उसका ज्वर उतर जाता है ॥

श्रीवेष्टकं घृतं हिङ्गुं देवदारु गवाच्चि च ।
गोवाला: सर्षपा: केशा: कटुकी निम्बपल्लवा ॥ ६ ॥
द्वे वृहत्यौ वचा चव्य: कर्पासास्थिनवायवा: ।
छागरोमाणि मायूरपिच्छमेकत्र मेलयेत् ॥ ७ ॥

लोहवान, घी, हींग, देवदारु, इन्द्रवारुणी, गोदन्ती, सरसों केश, कुटकी, नीम का पत्ता, दोनों प्रकार की कटेरी, बच, चब्य, बनौले, जव, बकरे के लोम, और मोर की पूंछ ॥६॥७॥

सुपिष्टो वत्समूत्रेण मृद्भाण्डे धारयेद् बुध: ।
एष माहेश्वरो धूपो धूपिनोन्मत्तरोगिणौ ॥ ८ ॥
ग्रहरक्षा पिशाचाद्या: पन्नगा: भूतपूतना: ।
शाकिन्यैकाहिकद्वित्रिज्वराश्चातुर्थिकान्तका: ।
नश्यन्ति क्षणमात्रेण ये चान्ये विघ्नकारिण: ॥६॥

वैल के मूत्र में पीस कर मिट्टी के वर्तन में इसका धूप देने से ग्रह, पिशाच, भूत, पूतना, शाकिनी तथा अनेक प्रकार का ज्वर और भी दु:ख देने वाले रोग तुरन्त शान्त हो जाते हैं ॥ ८-९ ॥

गुग्गुलं लशुनं सर्पि: कंचुकं कपिरोम च ।
शिखिकुक्कुटयोविष्ठा मल: पारावतस्य च ॥१०॥
एतद्धूपात् ग्रहा: क्रूरा: पिशाचाभूतपूतना: ।
डाकिन्यैहिज्वरा रौद्रा नश्यन्ति स्पर्शमात्रत: ॥११॥

गुगुल, लहसुन, घी, साँप का केचुर, बानर का रोम मुर्गी और कबूतर की विष्ठा एक में मिला कर इसका धप देने से बड़े से बड़े

भूत शान्त हो जाते हैं यह प्रयोग मिथ्या नहीं है इसमें सन्देह नहीं करना चाहिये ॥ १० ॥ ११ ॥

अंजनं राजिका कृष्णा मरीचैर्भूतनाशनम् ।
नागरं बकुचो निम्बं एतद्वा रौद्रमञ्जनम् ॥१२॥

काली सरसो कालीमिर्च को एक में मिला कर अञ्जन करने से भूत उतर जाता है, तगर, वाकची, और निम्बको एक में मिला कर अञ्जन करने से ज्वरकी भयानक पीड़ा शान्त हो जाती है ॥ १२ ॥

सहिंगू वारिणा पीता भूकदम्बस्य मूलिका ।
शाकिनी ग्रहभूतानां निग्रहं कुरुते ध्रुवम् ॥१३॥

गोरखमुण्डी की जड़ रख कर ऊपर से हींग का जल पीने से भूतों की शान्ति हो जाती है ॥ १३ ॥

विशालायाः फलं पक्वं हितं गोमूत्रनस्यतः ।
ब्रह्मराक्षसभूतानां पद्मं वा मरिचान्वितम् ॥१४॥

गौं के मूत्र में इन्द्रवारुणी का पका हुआ फल और कमल गट्टा तथा काली मिर्च को एक में मिला कर नास लेने से भूतों की शान्ति हो जाती है ॥ १४ ॥

पुष्पे कूष्माण्डतोयेन निशां सम्पिष्टनिर्मिताम् ।
गुटिकाञ्जनमात्रेण भूतग्रहविनाशिनी ॥१५॥

कोहड़े के फूल के रस में हल्दी मिला कर गोली बनाले फिर उसका अंजन करने से भूतों का नाश हो जाता है यह प्रयोग मिथ्या नहीं है इसमें सन्देह नहीं करना चाहिये ॥ १५ ॥

भूतनाशनमन्त्रः--ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः

कोशेश्वराय नमो ज्योतिः पतंगाय नमो नमः सिद्धि रुपोरुद्राय ज्ञपतिस्वाहा ॥

इस मन्त्र को यथाशक्ति जप करने से कठिन से कठिन ग्रह शान्त हो जाते हैं ॥

सद्योजातं तथा घोरो रुद्रो मनसि संस्थितम् ।
ज्वरं निहन्ति जन्तूनामशेषं सिद्धवंदितः ॥१६॥

सिद्धि से पूजा करने योग्य शिवजी के अघोर मन्त्र का हृदय में ध्यान करने से प्राणियों का ज्वर छूट जाता है ॥ १६ ॥

प्रयुक्तासीत्ततो विद्याल्लिखिता वटपल्लवे ।
पावकेन ज्वरं घोरं हन्ति तस्यावलोकनात् ॥ १७ ॥

वट वृक्ष के पत्ते पर कोयले से इस मन्त्र को लिख कर जिसका ज्वर आया हो उसको देने से ज्वर नाश हो जाता है और ग्रहों की पीड़ा तथा भूतावेश भी शान्त हो जाता है ॥ १७ ॥

ॐनमो भगवते रुद्राय छिन्धि छिन्धि ज्वराय ज्वरो-ज्वलित कपालपाणये हुँ फट् स्वाहा ।

इस मन्त्र को सिद्ध पर्यन्त जप करने से दूसरे पर ज्वरका आवेश हो जाता है ॥

ॐनमो भगवते रुद्राय भूताधिपतये हुँ फट् स्वाहा ।
लिखित्वा दक्षिणे बाहौ बध्योनित्यज्वरापहम् ।
अष्टोत्तरशतं जप्त्वा मन्त्रं त्रैमासिके ज्वरे ।

इस मन्त्रको लिख कर जिसको ज्वर आता हो उसके दाहिने हाथ में बाँध कर एक सौ आठ बार इस मन्त्र का जप किया करे तो किसी प्रकार का ज्वर शान्त हो जाता है ॥ १८ ॥

उन्मत्तकरणम्

ज्वरग्रस्तायनं दद्यादाचार्यो ज्वरशान्तये ॥१८॥
जलं कनकबीजानि धूर्तचूर्णं समन्ततः ।
गृहे चेटकविष्ठां तु तथाबीजकरं जलम् ॥१९॥
तन्दुन्मत्तकचूर्णातुभक्षणात्तत्क्षणात्व्रजेत् ।
एक विंशतिवारानभिमन्त्र्य प्रयत्नतः ॥२०॥

धतूरे का बीज, लौहकीट, गागौटा का बिष्ठा, और करंज के बीज का समान भाग लेकर चूर्ण बनावे उसे जल के साथ खाने पीने में जिसको दे देवे उसे तुरन्त उन्माद हो जाता है और निम्नलिखित मंत्र से इक्कीस बार अभिमन्त्रित करके वह जल पिला देने से तुरन्त उन्माद शान्त हो जाता है ॥ १९ ॥ २० ॥

मन्त्रः—ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये पिशाचाधिपतये आवेशय आवेशय कृष्णपिंगलाय फट् स्वाहा ॥

इस मंत्र का सिद्ध पर्यन्त जप करे जव मन्त्र सिद्ध हो जावे तव प्रयोग करना चाहिये ।

विस्फोटककरणम्

खाने पाने प्रदातव्यं दत्तोन्मत्तो भविष्यति ।
अथान्यत्सम्प्रवक्ष्यामि योगं परमदुर्लभम् ।
शत्रूणामपकारार्थं यथा मम प्रकाशितम् ॥२२॥
येन योजितमात्रेण शत्रुदेहे समन्ततः ।
विस्फोटकाश्च जायन्ते घोराः शत्रु विनाशकाः ॥२३॥

श्री शिवजी बोले कि अब मैं शत्रुओं को पीड़ा पहुँचाने के लिये सुगम उपाय को कहता हूँ जिसका प्रयोग करने से शत्रु के संपूर्ण शरीर में फोड़ा फुन्शी हो जाता हैं और उसका घर पीड़ा से पीड़ित होकर मर जाता है ॥

कीटकं भ्रमरं चापि कृष्णं वृश्चिकमेव च ।
मूषकस्य शिरो ग्राह्यं मर्कटस्य तथैव च ॥२४॥
कृत्वैकत्र समानानि पाषाणे च विचूर्णयेत् ।
यमदण्डसमं चूर्णं दुर्निवारं सुरैरपि ॥२५॥

सर्प, भौंरा, काली विच्छू, मूसा तथा बानर के सिर का समान भाग लेकर इसका चूर्ण बनालेवे यह चूर्ण यमराज के दण्ड के समान है इसका निवारण देवताओं से भी नहीं हो सकता ॥ २४ ॥ २५ ॥

योजयेच्छत्रुसङ्घाते वस्त्रे शय्यासु यत्नतः ।
विस्फोटाः सर्वगात्रेषु जायन्तेऽतिभयावहाः ।
पीडया सप्तरात्रेण म्रियते नात्र संशयः ॥२६॥

फिर शत्रु का संहार करने के लिये उसके वस्त्र अथवा उसकी शय्या पर डाल देने से अति भयानक विस्फोटक (फोड़ा) शत्रु के शरीर में उत्पन्न होने लगता है और उसकी पीड़ा से पीड़ित होकर सात दिन में शत्रु मर जाता है यह प्रयोग मिथ्या नहीं है ॥

नीलोत्पलं सकुमुदं तथा वै रक्तचन्दनम् ।
कुक्कुटीदंतसंयुक्तं पेषयित्वा प्रयत्नतः ।
तदालेपन मात्रेण सद्यः सम्पद्यते सुखम् ॥२७॥

जब उस शत्रु को आराम करना हो तब मुर्गी के पित्त में नील और लाल कमल तथा लाल चन्दन मिलाकर उसके शरीर पर लेप

कर देने से अवश्य वह पीड़ित पीड़ा से निवृत्त होकर सुखी हो जायगा इसमें कभी सन्देह नहीं करना चाहिये ।। २७ ।।

विस्फोटककरणमन्त्रः--ॐ नमो भगवति गृही गृहीवराहो सुभगे ठः ठः स्वाहा ।

इस मन्त्र को एक लाख जप करके सिद्ध कर लेवे तब प्रयोग करना चाहिये यह प्रयोग भी मारण के समान कठिन है ।।

कुष्ठीकरणप्रयोगः

अथान्यत्सम्प्रवक्ष्यामि कुष्ठीकरणमुत्तमम् ।
येन योजितमात्रेण कुष्ठी भवति नान्यथा ।।२८।।

श्री शिवजी बोले कि अब शत्रु को कुष्ठ रोग से पीड़ित करने का उत्तम उपाय वर्णन करता हूँ । सावधान होकर सुनो जिस प्रयोग से शत्रु निःसन्देह कुष्ठ रोग से पीड़ित होकर मर जाता है, इस प्रयोग में सन्देह नहीं करना चाहिये ।। २८ ।।

भल्लातकरसं गुञ्जा तथा वै मुण्डुकादिका ।
गृहगोधी समायुक्ता खाने पाने च दापयेत् ।
सप्ताहात् जायते कुष्ठं तीव्रपीडा समन्वितम् ।।२६।।

भिलावे का रस, घुंघुची, तथा मेढ़क आदि को एक में मिलाकर खाने पीने के पदार्थों में दे देने से एक सप्ताह में कुष्ठ रोग से शत्रु अवश्य पीड़ित हो जाता हैं यह शत्रु को पीड़ित करने का उपाय बिना मन्त्र के सिद्ध होता है, इसमें संदेह नहीं करना चाहिये ।। २६ ।।

एतस्य प्रशमं वक्ष्ये यथा मम प्रकाशितम् ।
धात्री खदिरनिम्बानि शर्करासहितानि च ।।३०।।
विचूर्ण्य मधुसर्पिभ्यां जीर्णान्नेन प्रदापयेत् ।

शालिभक्तं पटोलं च तथा शीघ्रं विपाचितम् ।
एतेन दत्तमात्रेण नरःसम्पद्यते सुखी ॥३१॥

आँवला, खैर, और नीम का चूर्ण बनाकर उसमें शक्कर, घी, और सहत मिलावे फिर पुराने चावल के साथ एक में पीसकर खिलावे उसके उपरान्त परोरा की तरकारी पुराने चावल का भात भोजन में पथ्य देने से मनुष्य सुखी हो जाता है ॥ ३० ॥ ३१ ॥

मक्षिकानिवारण प्रयोगः

तक्रपिष्टेन तालेन लेपयेत् पुत्रिकाकृतम् ।
तामादाय गृहाद्याति मक्षिका नात्र संशयः ॥३२॥

हरताल को जल में पीसकर एक पुतली के ऊपर लेप करके रख दे तो उसे सूँघ कर मक्खी घर में नहीं आती उसको सूँघ कर भाग जाती हैं यह प्रयोग भी बिना मन्त्र के सिद्ध है अर्थात् औषधियों के द्वारा ये क्रियायें सिद्ध हो जाती हैं ॥ ३२ ॥

मूषकानवारणप्रयोगः

श्वेतार्कदुग्धं कुल्थ्याश्च तिलचूर्णं तथैव च ।
अर्कपत्रे तु न्यस्तानि मूषकान्तकराणि वै ॥३३॥

तिल और कुल्थी का चूर्ण सफेद आक (मंदार) के दूध से मिलाकर आँक के पत्ते पर रख देवे तो चूहों का नाश हो जावे अर्थात् चूहे भाग जाते हैं ॥ ३३ ॥

तालकं छागविण्मूत्रं सपलांडुं च पेषयेत् ।
आलिप्य मूषकं तेन जीवितं च विसर्जयेत् ।
तं दृष्ट्वाथ गृहं त्यक्त्वा पलायन्ते हि कौतुकम् ॥३४॥

बकरी के मूत्र में बकरी की लेड़ी और हरताल पीसकर एक चूहे के ऊपर इसका लेप करके उसे जीवित छोड़ देवे तो उस चूहे को देख

कर दूसरे चूहे भी भाग जाते हैं इस प्रयोग में मंत्र सिद्ध करने का कोई प्रयोजन नहीं और न तो इन प्रयोगों पर मंत्र का विधान है ॥ ३४ ॥

मार्जारस्य मलं तालं पिष्ट्वा मूषिकमालिपेत् ।
तमाघ्राय गृहं त्यक्त्वा सद्यो निर्यान्ति मूषिकाः ॥३५॥

इसी प्रकार बिलार की विष्ठा और हरताल एक में पीसकर चूहे के ऊपर लेप करके छोड़ देवे उसे सूँघ कर दूसरे चूहे भाग जाते हैं ॥३५॥

मत्कुणनिवारणम्

अर्कतूलमयीं वर्तीं भावयेद् यावकेन च ।
दीपं तत्कटुतैलेन निःशेषा यान्ति मत्कुणाः ॥३६॥

आंक के रूई की बत्ती को महावर में रंगकर कडुवे तेल के दीपक में जलाने से खटमल अनायास में भाग जाते हैं ॥ ३६ ॥

अर्जुनस्य फलं पुष्पं लाक्षा श्रीवासगुग्गुलम् ।
श्वेतापराजितामूलं भल्लातकविडंगकम् ॥३७॥
धूपः सर्जरसोपेतः प्रदेयो गृहमध्यतः ।
सर्पाश्च मत्कुणा मूषा गन्धाद्यान्ति दिशोदश ॥३८॥

अर्जुन का फल, लाल और सफेद चन्दन, तथा सफेद अपराजिता की जड़ मिलावे, बायविडंग और राल इनको बराबर लेकर चूर्ण बनावे फिर घर में उसी का धूप देने से उसकी सुगंध से खटमल तथा चूहे सदा के लिये भाग जाते हैं इसमें सन्देह नहीं ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

सर्पनिवारणप्रयोगः

गुडं श्रीवासभल्लाते विडङ्गं त्रिफलायुतम् ।
लाक्षार्कपुष्पयुक्तश्च धूपो वृश्चिकसर्पहृत् ॥३९॥

गुड़, सफेद चन्दन, वायविडंग, त्रिफला, लाहका रस और आंक [मदार] का फूल इनको एक में मिला कर धूप देने से सर्प और विच्छू भाग जाते हैं ॥ ३९ ॥

मुस्ता-सिद्धार्थभल्ल-त कपिकच्छ-फलं गुडः ।
चूर्णभानुफलोपेतं लिहेत्सर्जरसैः समम् ॥४०॥
मत्कुणाः मशकास्सर्पाः मूषका विषकीटकाः ।
पलायन्ते गृहं त्यक्त्वा यथा युद्धेषु कातराः ॥४१॥

नागरमोथा, सरसों, भिलावां, किवाच का फल और गुड़, मदार के फलको वरावर भाग लेकर चूर्ण वनालेवे उसका धूप देने से खटमल, मच्छर, सर्प और मूसा तथा और भी बनैले कीड़े पर घर छोड़ कर ऐसे भाग जाते हैं, जैसे युद्ध से कायर भाग जाते हैं ॥ ४० ॥ ४१ ॥

मशकनिवारणम्

भल्लातकबिडंगानि विश्वकं पुष्करं तथा ।
जम्बुलोमशकं हन्ति धूपाद्धा गृहमध्यतः ॥४२॥

भिलावा, वायविडंग, सोठ पोहकर मूल, और जामुन इनका समान भाग लेकर चूर्ण वनावे उसका धूप देने से मच्छर भाग जाते हैं ॥४२॥

क्षेत्रोपद्रवनाशनप्रयोगः

अथ क्षेत्रस्य सस्यानां सर्वोपद्रवनाशनम् ।
बालुकाश्वेतसिद्धार्थान् प्रक्षिपेत क्षेत्रमध्यतः ॥४३॥
शलभाः सर्पकीटाश्च वराहा मृगमूषकाः
मशकास्तत्र नो यान्ति मन्त्रविद्याप्रभावतः ॥४४॥

अव खेत में होने वाले अन्न पर सब प्रकार के उपद्रव को नाश करने का उपाय वर्णन करता हूं बालू, सफेद सरसों एक में मिलाकर

खेत में डाल देने से कीड़ी, कीड़े सूअर, हरिण, मूसा, मच्छर आदि मन्त्र विद्याके प्रभाव से उस खेत में से सब भाग जाते हैं ॥ ४३-४४ ॥

पूर्वाषाढाख्यऋक्षे तु वन्दाम्बिभीतकवृक्षजाम् ।
सस्यमध्ये क्षिपेत्तेन सस्यवृद्धिर्भवेद् ध्रुवम् ॥४५॥

पूर्वाषाढा नक्षत्र में वहेड़े का बांदा लेकर इस निम्न मन्त्र से अभिमन्त्रित करके अन्न के खेत में गाड़ देने से अन्न की वृद्धि होती है ॥ ४५ ॥

ॐ नमः सुरभ्यः बलजः उपरि परिमिली स्वाहा ।

इस मन्त्रका दश हजार जप करनेसे सिद्धियाँ होती हैं। इस मंत्र से अभिमन्त्रित करके प्रयोग करे ।

रक्तनिवारणम्

शैलूषत्वचा क्षिश्रितं तण्डुलानां, विधाय पिष्टं विनियोजनीयम् । कन्दर्पगेहे मृगलोचनायाः, रक्तं निहन्त्याशु हठेन योगः ॥ ४६ ॥

लिसोड़े की छाल और साठी के चावल की पोटरी बाँध कर स्त्री के भग में रख देने से रक्त अवश्य और शीघ्रही बन्द हो जाता है ॥४६॥

धात्री च पथ्या च रसाञ्जनं च, कृत्वा विचूर्णं सजलं निपीतम् । अत्यन्तरक्तोत्थितमुग्रवेगं, निवारयेत्सेतुमिवाम्बुपूरम् ॥ ४७ ॥

आँवला, वहेड़ा, और निसोत का चूर्ण जलके साथ पीने से अन्यन्त वेग से आता हुआ स्त्रियों का रक्त बिना प्रयत्न के बन्द हो जाता है ॥ ४७ ॥

मूलं तु शरपुङ्खाया पेषयेत्तण्डुलोदकैः ।
पिबेत्कर्षकमात्रं तु बधूरक्तप्रशान्तये ॥४८॥

चावल का जल और सरपोंखा की जड़ को पीस कर दस मासे पीने से स्त्रियों का रक्त बहना बन्द हो जाता है ॥ ४८ ॥

दार्वीरसांजनवृषार्द्धकिरातबिल्व, भल्लातकैरथकृतो मधुना कषायः । पीतो जयत्यतिबलं प्रदरं सशूलं पीतं सितारुणविलोहितनीलकृष्णम् ॥४९॥

घी और शहत के साथ, देवदारु, रसांजन, चिरायता भिलावा अडूसा, नागरमोथा, आदि का क्वाथ पीने से बड़ा से बड़ा प्रशूल, पीत, श्वेत, रक्त, नील, कृष्ण आदि सब प्रकार का प्रदर रोग शान्त हो जाता है इसमें संशय नहीं करना चाहिये । ये क्रियायें बिना मंत्र के सिद्ध होती हैं ॥ ४९ ॥

वन्ध्यात्वनाशनप्रयोगः

समूलपत्रां सर्पाक्षीं रविवारे समुद्धरेत् ।
एकवर्णगवां क्षीरे कन्याहस्तेन पेषयेत् ॥५०॥
ऋतुकाले पिबेद्वन्ध्या बलार्थं तद्दिनेदिने ।
क्षीरशाल्यन्यमुद्गं च लध्वाहारं प्रदापयेत् ।
एवं सप्तदिनं कुर्याद् वन्ध्या भवति गर्भिणी ॥५१॥

रविवार के दिन पत्तों के सहित सुगन्धरा की जड़ लाकर एक वर्ण की गौ के दूध में बन्ध्या के हाथसे उसको पिसवा कर ऋतु काल में पीवे, और साठी का चावल का भात मूंग की दाल, दूध, और जल्दी से पचने वाले अन्न भोजन करने से बन्ध्या स्त्री शीघ्र ही गर्भवती हो जाती है ॥ ५० ॥ ५१ ॥

उद्वेगं भयशोकौ च दिवानिद्रां विवर्जयेत् ।
न कर्म कारयेत् किंचित वर्जयेच्छीतमातपौ ॥५२॥
न तथा परमां सेवां कारयेत् पूर्ववत् क्रियाम् ।
पतिसङ्गाद्‌गर्भलाभो नात्र कार्य्या विचारणा ॥५३॥

उसी प्रकार औषधी के सेवन समय में उसे, भय, शोक न करके दिन में नहीं सूतना चाहिये, अधिक परिश्रम, और ज्यादा ठंडा, ज्यादे गरम, तथा अधिक परिश्रम नहीं करना चाहिये । औषधि सेवन कर लेने पर पति से प्रसङ्ग करे तो वन्ध्या स्त्री अवश्य गर्भ को धारण कर सकती है ॥

मुस्ता प्रियंगु सौवीरं लाक्षाक्षौद्रं समं पिबेत् ।
कर्षतण्डुलतोयेन वन्ध्या भवति पुत्रिणी ।
पथ्यमुक्तं यथापूर्वन्तद्वत्सप्तदिनं पिबेत् ॥५४॥

उपरोक्त रीति से नागरमोथा, कांगनी, बैर, लाह का रस और शहद इनको बराबर लेकर पुराने चावलके जल के साथ प्रतिदिन दश मासा सातदिन तक पीवै तो वन्ध्या स्त्री भी पुत्रवती हो जाती है । गर्भ धारण करने का यह प्रयोग बिना मन्त्र सिद्ध है इसमें सन्देह नहीं करना चाहिये ॥ ५४ ॥

सपिप्पली-केशर-भृङ्गवेर-क्षुद्रोषणं गन्धघृतेन पीतम् । वन्ध्यापि पुत्रं लभते हठेन, योगस्तु सोऽयं विधिना मयोक्तः ॥ ५५ ॥

पीपल, केसर, आदी और काली मिर्च को घी में मिला कर पीने से वन्ध्या स्त्री अवश्य पुत्रवती हो जाती है ॥ ५५ ॥

मूलं शिफा वा किल लक्ष्मणाया, ऋतौ निपीय त्रिदिनं पयोभिः । क्षीरान्नचर्या नियमेन भुंक्ते, पुत्रं प्रसूते वनिताविचित्रम् ।। ५६ ।।

सफेद कटेली की जड़, और जटामासी के पत्ते को दूध में पीस कर तीन दिन तक पीवे और दूध आदि पदार्थों का हलका भोजन करे तो वन्ध्या स्त्री अवश्य पुत्र को प्राप्त करे ।। ५६ ।।

तुरंगगन्धाघृतवारिसिद्धमाज्यं पयः स्नानदिने च पीत्वा । प्राप्नोति गर्भं नियमं चरन्ती वन्ध्या च नूनं पुरुषप्रसंगात् ।। ५७ ।।

असगन्ध को जल में पकाकर घी में भूंज ले फिर दूध और घी के साथ स्नान के समय उसको पीवे और नियम पूर्वक रहे तो बन्ध्या स्त्री पुत्रवती हो जाती है ।। ५७ ।।

कृष्णापराजितामूलं बस्तक्षीरेण संपिबेत् ।
ऋतुस्नाता त्रिघस्रं तु वन्ध्यागर्भधरा भवेत् ।।५८।।

रजस्वला स्नान के उपरान्त काली अपराजिता की जड़ को गौ के वा बकरी के दूध में पीस कर तीन बार पीने से बन्ध्या स्त्री भी गर्भ को धारण कर लेती है ।। ५८ ।।

नागकेशरक चूर्णं नूतनाद् गव्यदुग्धतः ।
पिबेत्सप्तदिनं दुग्धं घृतैर्भोजनमाचरेत् ।
तदृतौ लभते गर्भं सा नारी पतिसंगता ।। ५९ ।।

नवीन दूध में नागकेशर का चूर्ण मिलाकर सात दिन तक पीने से दूध और घी का भोजन करने से बन्ध्या स्त्री पति के संग से गर्भ को धारण कर लेती है ।। ५९ ।।

तिलरसगुडचैकं गोपुरीषानि योगात्तरुणवृषभ-
मूत्रं प्रस्थयुक्तं विपक्वम् । ऋतुदिवसतुमध्ये सप्तवारं
च पीतं जनयति सुतमेतन्निश्चितं पुष्पितैव ॥६० ।

युवा भैंस के एक सेर मूत्र में तिल, रस और गुड़ मिलाकर गौ के गोबर के कण्डे पर पकावे और ऋतुकाल के दिन सात बार खावे तो निश्चय गर्भ को धारण करे ॥ ६० ॥

कदम्बपत्रं श्वेतं च बृहतीमूलमेव च ।
एतानि समभागानि ह्यजाक्षीरेण पेषयेत् ॥६१॥
त्रिरात्रं पञ्चरात्रं वा पिबेदेतन्महौषधम् ।
निपीयमाने तु सदा गर्भो भवति निश्चितम् ॥६२॥

कदम्ब का पत्र, सफेद चन्दन और कटेली की जड़ इनका समान भाग लेकर बकरी के दूध में पीस कर ऋतु काल में तीन अथवा पाँच रात्रि तक पीने से वन्ध्या स्त्री अवश्य गर्भ को धारण करेगी यह क्रिया बिना मन्त्र के सिद्ध होती है इसमें सन्देह नहीं करना चाहिये ।६१।६२।

विष्णुकान्तासमूलं तु पिष्ट्वा दुग्धेषु माहिषैः ।
महिषीनवनीतेन ऋतुकाले तु भक्षयेत् ॥६३॥
एवं सप्तदिनं कुर्यात् पथ्यमुक्तं च पूर्ववत् ।
गर्भं सा लभते नारी काकवन्ध्या सुशोभनम् ६४॥

भैंस के दूध में जड़ सहित विष्णुक्रान्ता को पीसकर भैंस के घी के साथ सात दिन तक भक्षण करे और पहिले कहे हुए पथ्य से भोजन करे तो काक वन्ध्या स्त्री भी अवश्य गर्भ धारण करे ।

गर्भे संजातमात्रे तु पश्चान्मासाच्च वत्सरात् ।

म्रियते द्वित्रिवर्षायां यस्याः सा मृतवत्सका ॥६५॥
प्राङ्मुखां कृत्तिकर्क्षे तु वध्वा कर्कोटकी हरेत् ।
तत् कन्दं पेषयेत्तोयैः कर्षमात्रं सदा पिबेत् ।
ऋतुकाले तु सप्ताहं दीर्घजीवी सुतो भवेत् ॥६६॥

जिस स्त्री का बालक जन्म लेते ही या थोड़े दिनों में मर जाते हैं उसको मृतवत्सा कहते हैं । अब मृतवत्सा की चिकित्सा का वर्णन करते हैं रविवार के दिन कृत्तिका नक्षत्र में पूर्व मुख होकर पीतपुष्पा को उखाड़ लावे फिर उसे पानी में पीस कर सात दिन तक दश मासा प्रति दिन पीने से दीर्घजीवी पुत्र होता है ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

या बीजपूरद्रुममूलमेकं, क्षीरेणसिद्धं हविषा विमिश्रम् । ऋतौ तु पीत्वा स्वपतिं प्रयाति, दीर्घायुषं सा तनयं प्रसूते ॥ ६७ ॥

जो स्त्री ऋतु के समय बीजौरा नीबू के जड़को दूध में पीस उसमें घी मिला कर खा जावे फिर पति से प्रसंग करे तो दीर्घायु पुत्र उत्पन्न होवे ॥ ६७ ॥

गर्भस्तंभनम्

अकस्मात् प्रथमे मासे गर्भे भवति वेदना ।
गोक्षीरैः पेषयेत्तुल्यं पद्मकोशीरचन्दनम् ॥६८॥
पलमात्रं पिबेन्नारी त्र्यहाद् गर्भः स्थिरो भवेत् ।
अथवा मधुकं दारु शाकवृक्षस्य बीजकम् ।
सम्पिष्य क्षीरकाकोलीं पिबेत्क्षीरैस्तु गोभवैः ॥६९॥

यदि गर्भवती को पहिले मास में पीड़ा उत्पन्न हो तो उसे पद्माख, खस और लालचन्दन इनको बराबर लेकर गाय के दूध में पीस कर एक पल तीन दिन तक उसे पिलावे तो उसके गर्भ का स्तंभन हो जाता है। अथवा देवदारु, मुलेठी, सिरिस का बीज, और काली गौ के दूध में पीस कर पिला दे तो गर्भ रुक जावे ॥ ६८ ॥ ६९ ॥

नीलोत्पलं मृणालं च यष्टि कर्कटशृङ्गिकौ ।
गोक्षीरैस्तु द्वितीयं च पीत्वा शाम्यति वेदना ॥७०॥

नीलकमल की जड़, लाहका रस, काकरासिंगी, इनको बराबर लेकर गौ के दूध से पीस कर पिलादेवे तो दूसरे मासकी गर्भ वेदना शान्त हो जाती है ॥ ७० ॥

अथवाश्वत्थवल्कं च तिलं कृष्णं शतावरीम् ।
मंजिष्ठासहितं पिष्ट्वा पिबेत्क्षीरैश्चतुर्गुणैः ॥७१॥

अथवा पीपलकी छाल, काला तिल, शतावर इनको बरावर लेकर गौके दूधमें पीस कर पिलादे तो दूसरे मासकी गर्भ पीड़ा शान्त हो जाती है ॥ ७१ ॥

श्रीखण्डं तगरं कुष्ठं मृणालं पद्मकेशरम् ।
पिबेच्छीतोदकैः पिष्टं तृतीये वेदनावति ।
अथवाक्षीरकाकोलीबलांपिष्ट्वा पयः पिबेत् ॥७२॥

चन्दन, तगर, कूट, कमल की जड़, कमल केसर, काकोली असगन्ध इनको पीस कर शीतल जलके साथ पिलादेने से तीसरे महीने की गर्भ पीड़ा शान्त हो जाती है ॥ ७२ ॥

नीलोत्पलं मृणालानि गोक्षुरं नागकेसरम् ।
तुर्य्यमासे गवां क्षीरैः पिबेच्छाम्यति वेदना ॥७३॥

नीलकमल और कमलकी जड़, गोखरू को पीस कर गौ के दूधके साथ पिला देने से चौथे महीने की गर्भपीड़ा शान्त हो जाती है ॥७३॥

पुनर्नवाथ काकोली तगरं नीलमुत्पलम् ।
गोक्षुरं पंचमे मासे गर्भक्लेशहरं पिबेत् ॥ ७४ ॥

गदहपुन्ना, काकोली, तगर, नीलकमल, गोखरू, गौ के दूधके साथ पीने से पाँचवें महीने की गर्भ पीड़ा शान्त हो जाती है ॥ ७४ ॥

सितां कपित्थमज्जां च शीततोयेन पेषयेत् ।
षष्ठे मासि गवां क्षीरैः पिबेत् क्लेशनिवृत्तये ॥७५॥

ठण्डे जलमें कैतकी गुद्दी और मिश्री मिला कर गौके दूधके साथ पीने से छठवें महीने की गर्भ पीड़ा शान्त हो जाती है। इसमें सन्देह नहीं ॥ ७५ ॥

कशेरुं पौष्करं मूलं शृङ्गाटं नीलमुत्पलम् ।
पिष्ट्वा च सप्तमे मासि क्षीरैः पीत्वा प्रशाम्यति॥७६॥

कसेरू, पोहकरमूल, सिंघाड़ा और नीलकमल एक साथ पीसकर पीने से सातवें मास के गर्भ की पीड़ा शान्त हो जाती है ॥ ७६ ॥

यष्टिं पद्माक्षमुस्तं च केशरं गजपिप्पलीम् ।
नीलोत्पलं गवां क्षीरैः पिबेदष्टममासिके ॥ ७७ ॥

मुलेहठी, पद्माख, मोथा और नागकेसर, गजपीपल इनको गौ के दूध में पीसकर पीने से आठवें महीने की गर्भ पीड़ा नष्ट हो जाती है।

विशालबीजकं कोलं मधुना सह पेषयेत् ।
वेदना नवमे मासि शान्तिमाप्नोति नान्यथा ॥७८॥

इन्द्रायन के बीज, शीतल चीनी, शहद के साथ पीने से नवें मासकी गर्भ पीड़ा नष्ट हो जाती है ॥ ७८ ॥

शर्करा गोस्तनी द्राक्षा सक्षौद्रं नीलमुत्पलम् ।
पाययेद्दशमे मासि गवां क्षीरैः प्रशान्तये ॥७९॥

गौ के दूध में मिश्री, मुनक्का, छोहाड़ा, शहद, नीलकमल को पीने से दशवें मासकी गर्भपीड़ा नष्ट हो जाती है ॥ ७९ ॥

अथवा शुंठिसंसिद्धं गोक्षीरं दशमे पिबेत् ।
अथवा यष्टिमन्दारशुण्ठीक्षीरेण सम्पिबेत् ॥८०॥

अथवा सोंठ से सिद्ध किया हुआ दूध या गौ के दूध के साथ मुलहठी देवदारु और सोंठ पीने से भी पीड़ा नष्ट हो जाती है ॥ ८० ॥

धात्र्यंजनं सावरयष्टिकाख्यं क्षीरं निपीतं प्रमदा हठेन । सप्ताहमात्रं विनियोज्य नारी, स्तम्भानि गर्भचलितं न चित्रम् ॥ ८१ ॥

जो स्त्री एक अठवारा तक नियम करके आँवला से सौवीरांजन, और मुलेठी को गौ के दूध के साथ पीती है उसका गर्भ स्थिर हो जाता है। फिर वह चलायमान होता है ॥ ८१ ॥

कुलालहस्ताद्भवकर्दमस्य, मेषीपयःक्षौद्रयुतस्य मात्रम् । गर्भच्युतिं शूलमथो निवार्य करोति गर्भं प्रकृतं हठेन ॥ ८२ ॥

कुम्हार के हाथ की लगी हुई चाक पर की मिट्टी बकरी के दूध में मिलाकर पीनेसे गर्भ की पीड़ा शान्त हो जाती है और गर्भ चलायमान नहीं होता ॥ ८२ ॥

कशेरुशृङ्गाटकजीरकाणि, पयोघनैरंडशताव-

रीभिः । सिद्धं पयश्शर्करया विमिश्रं, संस्थापयेद् गर्भमुदीर्य शूलम् ॥ ८३ ॥

कसेरू, सिंघाड़ा, जीरा, नागरमोथा, रेड़ी के बीज, सतावर से सिद्ध किये हुए दूध में मिला कर पीने से गर्भ की पीड़ा छूट जाती है । गर्भ स्थिर हो जाता है ॥ ८३ ॥

कन्दं कौमुपकस्य माक्षिकयुतं क्षीराज्यमिश्रं पिबेत्
सप्ताहं सितया सुपक्वमबला शीतीकृतं वायुना ।
गर्भस्रावमरोचकं स पवनं शोफं त्रिदोषं वमिं शूलं
सर्वविधं निहन्ति नियमादेवं च यत्तत्स्मृतम् ॥८४॥

दूध में कोई की जड़, शहद, घी मिलाकर औटा ले फिर उसको ठण्ढा करके विधिपूर्वक सात दिन तक चीनी मिलाकर पीने से गर्भस्राव, अरुचि और सम्पूर्ण रोग नष्ट हो जाते हैं ॥ ८४ ॥

कुवलयं सतिलं पीत्वा क्षीरेण मधुसितायुतम् ।
गुरुतरदोषैश्चलितं गर्भं संस्थापयेदाशु ॥८५॥

दूधमें कमलकन्द, तिल और मिश्री मिलाकर पीने से गिरता हुआ गर्भ तुरन्त रुक जाता है ॥ ८५ ॥

ह्रीबेरातिविषामुस्तामरिचैः संश्रृतं जलम् ।
दद्याद् गर्भे प्रचलिते प्रदरे कुक्षिशूलके ॥८६॥

ह्रीवेर, अतीस, मोथा और कालीमिर्च का काढ़ा पीने से गर्भका रोग नष्ट हो जाता है । ये सब प्रयोग बिना मन्त्र के सिद्ध हो जाते हैं, इसमें सन्देह नहीं ॥ ८६ ॥

गोक्षीरं शर्करायुक्तं शुष्कगर्भप्रशान्तये ।

पिबेद्वा मधुकं चूर्णं गंभारीफलचूर्णकम् ॥
समांसं गव्यदुग्धेन गुर्विण्या व्याधिशान्तये ॥८७॥

गौ के दूध में शक्कर मिलाकर पीने से गर्भका सूजन रुक जाता है गंभारी फलका चर्ण शहद में मिला कर पीने से अथवा गौ का दूध ही पीने से गर्भ सूखना रुक जाता है ॥ ८७ ॥

सुखप्रसवप्रयोगः

श्वेतं पुनर्नवामूलं चूर्णं योनौ प्रवेशयेत् ।
क्षणात् प्रसूयते नारी गर्भेणातिप्रपीडिता ॥८८॥

प्रसव कालमें यदि स्त्री को अत्यन्त पीड़ा हो तो सफेद गदहपुन्ना की जड़ का चूर्ण योनि में रखदेने से तुरन्त प्रसव हो जाता है । विशेष पीड़ा नहीं होती ॥ ८८ ॥

दशमूलीशृतं तोयं घृतसैन्धवसंयुतम् ।
शूलातुरा पिबेन्नारी सा सुखेन प्रसूयते ॥८९॥

दशमूल के काढ़े में घी और सेंधा निमक मिलाकर पीने से भी सुख पूर्वक प्रसव हो जाता है ॥ ८९ ॥

ॐ मन्मथः ॐमन्मथः ॐमन्मथः ॐमन्मथ
वाहिनी लंबोदर मुंच मुंच स्वाहा ।
अनेन मन्त्रेण जलेषु तप्तं, पातुं प्रदेयं शुचिना नरेण ।
तोयाभिपानात्खलुगर्भवत्या प्रसूयते शीघ्रतरं सुखेन ॥

पवित्र होकर इस निम्नलिखित मन्त्रसे गरम जल अभिमन्त्रित करके प्रसूति को पिला देवे तो सुख पूर्वक प्रसव हो जाता है ॥ ९० ॥

लांगलीकन्दचूर्णं वा मूलं त्रिरचिटोद्भवम् ।



